एक पैगाम

राजेश प्रकाश
कृष्णनगर,

रंगप्रक्रिया से

'शह, ये मात' . उन व्यक्तियों के जीवन-व्यवहार, इच्छा-आकांक्षाओं, सफलता-असफलताओं के तथ्य और कल्पना के सम्मिश्रण की उपज है, जिन्हें मैं बहुत करीब से जानता-पहचानता हूं, जिन्होंने सदा एक अनिश्चित, एक विचित्र-बेतुका, एक अराजकता का जीवन जिया और जी रहे हैं। लेकिन मैंने उनके जीवन से घटनाओं के ताने-बाने ज्यों के त्यों न लेकर वैसी ही स्थिति-परिस्थितियों में जी रहे व्यक्तियों से कुछ लेकर नाटक के चरित्रों को दिया है, जिन में भाव-संवेग मेरे हैं।

'शह, ये मात' लिखने और खेलने के अनन्तर मैंने एक हलकापन महसूस किया, तेज-तल्ख यादों का हलकापन जो जाने-अनजाने मुझे साल रहा था। एक संतोष हुआ मुझे सरल प्रेक्षकों और कटु समीक्षकों को नाटक के करुण-हास्य की उग्र-उत्तेजना को अनुभव करते देखकर।

आज कौन नहीं जी रहा है एक विचित्र अनिश्चित बेतुके जीवन के त्रास-हास को? उसकी ऊहापोह के उग्र संतोष-असंतोष को? जी सभी रहे हैं—रीती-बीती इच्छा-असफलताओं के संत्रास में, 'स्व' को समझने-समझाने के तनावपूर्ण वर्तमान में, एक करुण-हास के विसंगत परिवेश में। यह जीना व्यक्तिगत हो तो, दाम्पत्यगत हो तो, वर्गगत हो तो, अवस्थागत हो तो, परिस्थितिगत हो तो, समाजगत हो तो। सभी अतीत की असफलताओं और भूलों के उग्र वर्तमान में अनिश्चित भविष्यत् को जी

समय :

प्रथम अंक	·	सुबह का
दूसरा अंक		उसी दिन दोपहर का
तीसरा अंक	.	उसी दिन शाम का

रहे हैं, जिसकी उत्तेजना का अनुभव रंगकर्मियों और सामाजिक को किसी खेल-कूद के विजित तनाव व अनिश्चित कार्य व्यापार में ही प्राप्त हो सकता है।

अब तक की रंगप्रक्रिया में मुझे अनुभव हुआ है कि सही नाटक वही है जो रंगकर्मियों और प्रेक्षकों को जीवन में व्याप्त उस विचित्र अनिश्चितता एवं असामान्यता के उस संतोष-असंतोष का अनुभव करा दे जो उनमें एक एहसास, एक तनाव, एक त्रास, एक हास, एक तिलमिलाहट भरकर उन्हें बेहतर सोचने-करने को विवश कर दे।

सम्भवतः इसीलिये नाटक की छपास ने मुझे कभी नहीं व्यापा। छपाने के लिए मांगे जाने पर भी टाल-मटोल कर जाता हूं। मेरे नाटक लिखने और मंचन के बीच भी पर्याप्त अन्तराल रहता है। कारण—मेरे निर्देशक व अभिनेता को नाटक में उस उत्तेजना की अर्थवत्ता की कमी खटकने रहती है जो सच्चे अर्थों में नाटक को नाटक का रूप देती है। अब अर्से तक जूझता रहता हूं नाटक में उस उग्र संतोष की उत्तेजना को सभी ने लो लिये। यही अनुभव है कथातन्त्र से मुक्त 'शह, ये मात' के मूल में और यही अनुभव है मेरा रंगमंच।

अगस्त, १६७५

—बृजमोहन शाह

हैं। कप्तान के गले में थर्मामीटर और घड़ी—वह बन्डोव, वास्कट और पाजामा पहने है, बीच-बीच में ज़ोर-ज़ोर से हुक्का गुड़गुड़ाता रहता है।)

आगंतुक : लो मैंने इसे मार लिया।

कप्तान : ठहरो ' इंशुअरेन्स-एजेन्ट का क्या हुआ ?

आगंतुक आ जायेगा।

कप्तान : कब ?

आगंतुक : आज शाम को'''या फिर रात को।

कप्तान : पक्की बात ?

आगंतुक : पक्की बात।

कप्तान : बीस साल का-सा रहेगा'''?

आगंतुक : (मुस्कराकर) क्यों ?

कप्तान कैसा रहेगा ?

आगंतुक : हाँ, चलिए, (कप्तान चलता है) देखकर नाउठ है।

कप्तान · नाउठ ?

आगंतुक : हां।

कप्तान : (दूसरी चाल चलता है) लो।

आगंतुक : (चलकर) शह।

कप्तान : शह ?

आगंतुक : बचिए (कप्तान सोचता है) आप बहुत वक्त लेते हैं।

कप्तान : वक्त ? मैं ?

आगंतुक : जल्दी चलिए।

कप्तान : सोचने दो—आ'''नहीं।'''सुनो वो रसगुल्ले-गुलाबजामुन नहीं लाये मेरे लिये ?

आगंतुक : बासी थे।

कप्तान : मुझे बासी ही अच्छे लगते हैं।

प्रथम अंक

□

(कप्तान के घर का दालान। रंगशीर्ष पर बायें एक छोटा कमरा। कमरे का दरवाजा कप्तान के कमरे की ओर खुलता है और फ्रेमनुमा बड़ी खिड़की प्रेक्षकों की ओर झांकती है। इस कमरे में लड़का रहता है। खिड़की से एकदम बायें पानी का नल, नल के तीन तरफ सीमेंट की बाड़। खिड़की और नल के बीच दीवार से लगकर एक साफ-सुथरी वेदी। दायीं और बायीं दीवारों में दो-दो दरवाजे, दायीं दीवार का एक दरवाजा कप्तान के शयन-कक्ष में तथा दूसरा बैठक में खुलता है, बायीं दीवार का एक दरवाजा बाथरूम का और दूसरा बाहर से आने-जाने का है। रंगशीर्ष पर दायीं ओर मुर्गे का दड़बा, दड़बे से कुछ बायें हटकर एक सूखा पेड़ बाहें पसारे खड़ा है, पेड़ में एक खोह।

मंच-मध्य एक रॉकिंग-चेयर, एक चौकी और स्टूल। चौकी पर शतरंज।

रंग-पीठ पर दायें पर्वतारोही का झोला, झोले में पर्वतारोही के पुराने कपड़े तथा अन्य सामान।

रंगशीर्ष की दीवार के पास झाड़ू, लकड़ी, कोयले, कुल्हाड़ी, रस्सी इत्यादि। पेड़ और लड़के के कमरे से तने तार पर साड़ी सूख रही है।

यवनिका उठने पर कप्तान और आगंतुक शतरंज खेलते नज़र आते

है। कप्तान के गले में थर्मामीटर और घड़ी—वह कनटोप, वास्कट और पाजामा पहने है, बीच-बीच में ज़ोर-ज़ोर से हुक्का गुड़गुड़ाता रहता है।)

आगंतुक : लो मैंने इसे मार लिया।

कप्तान : ठहरो ' इंशुअरेन्स-एजेन्ट का क्या हुआ ?

आगंतुक : आ जायेगा।

कप्तान : कब ?

आगंतुक ' आज शाम को'''या फिर रात को।

कप्तान : पक्की बात ?

आगंतुक : पक्की बात।

कप्तान : बीस साल का-सा रहेगा'''?

आगंतुक : (मुस्कराकर) क्यों ?

कप्तान ' कैसा रहेगा ?

आगंतुक : हाँ, चलिए, (कप्तान चलता है) देखकर नाउठ है।

कप्तान : नाउठ ?

आगंतुक : हां।

कप्तान : (दूसरी चाल चलता है) लो।

आगंतुक ' (चलकर) शह।

कप्तान : शह ?

आगंतुक ' बचिए (कप्तान सोचता है) आप बहुत वक्त लेते हैं।

कप्तान : वक्त ? मैं ?

आगंतुक : जल्दी चलिए।

कप्तान : सोचने दो—आ'''नहीं।'''सुनो वो रसगुल्ले-गुलाबजामुन नहीं लाये मेरे लिये ?

आगंतुक : बासी थे।

कप्तान : मुझे बासी ही अच्छे लगते हैं।

आगंतुक : कमोवेश।
कप्तान : मतलब ?
आगंतुक : इस पेड़ को कब लगाया ?
कप्तान : आठ-नौ, नहीं दस-पन्द्रह साल पहले।
आगंतुक : तो इसकी उम्र दस-पन्द्रह साल हुई और यह दस-पन्द्रह साल के बोझ के नीचे दबकर मर गया।
कप्तान : यह पेड़'''क्या हो गया ?
आगंतुक : मर गया। (क्षणिक विराम। कप्तान पेड़ को हिलाता है) यह क्या ?
कप्तान : उखाड़ रहा हूं।
आगंतुक : क्यों ?
कप्तान : अच्छा नहीं लगता। (हांफता है) सुनो तुम कितने साल के बोझ के नीचे दबे हो ?
आगंतुक : पैंतालीस। और आप ?
कप्तान : बको मत !
आगंतुक : मेरा मतलब आपकी पत्नी ?
कप्तान : पत्नी ?
आगंतुक : हां, आपकी पत्नी।
कप्तान : प'''त्''नी'''
आगंतुक : हां।
कप्तान : चालीस'''नहीं पैंतालीस-छीयालीस। सुनो अगर कोई किसी को छोड़कर कहीं चली जाए और एक दिन अचानक लौट आए, तो क्या हो ?
आगंतुक : पुनर्मिलन।
कप्तान : मैं मर्द की नहीं औरत की बात कर रहा हूं, ब्लडीफूल !

आगंतुक : हूँऽऽ···

कप्तान : क्या ?

आगंतुक : चलो, चाल आपकी है।

(लड़की का प्रवेश। दड़बे में चारा डालती है। मुर्गों की आवाज। नल पर हाथ धोती है। आगंतुक उसे गौर से देखता रहता है। उसके पास जाता है। कप्तान चोरी से मोहरे सरकाता है।)

कप्तान : शह बचो।

आगंतुक : बचता हूँ। (लड़की को एक पुड़िया देता है) ले।

(वह पुड़िया लेकर भाग जाती है) पानी नहीं पिलाओगी ?

(सिगरेट जलाकर वेदी के पास जाता है)

कप्तान : (जोर से) नहीं···वहां मत बैठो ! मत बैठो वहां पर ! (उसे वापस लाता है) मत छूना उसे !

आगंतुक : मेरे कमरे का क्या हुआ ?

कप्तान : हो जायेगा। (अंगूठी के इशारे से) सुनो, तुम इस पेड़ को नहीं उखाड़ सकते ?

आगंतुक : अंगूठी !

कप्तान : हां, क्यों ?

आगंतुक : बढ़िया है।

कप्तान : असली सोने की है। शादी में मिली थी।

आगंतुक : क्या उम्र होगी ?

कप्तान : पेड़ की ?

आगंतुक : लड़की की।

कप्तान : तुम इस पेड़ को नहीं उखाड़ सकते ?

आगंतुक : आप यह चाल नहीं चल सकते।

कप्तान क्यों ?

आगंतुक मोहरे मरते हैं।

कप्तान . बिना कसूर के मरवाते हैं !

आगंतुक फिर भी कह रही है।

(औरत का प्रवेश। हाथ में दवा की शीशी व पुड़िय आगंतुक सहमकर खड़ा हो जाता है। उसे देखते ही औरत चेहरे पर तनाव उभर आता है। आदमी का वहां प्रस्थान।)

औरत · फिर बुलाया इसे !

कप्तान . खुद आया, अपने मकसद से।

औरत . मैं सौ बार कह चुकी हूं कि यह आदमी अच्छा नहीं लगता मत बुलाया करो यहां !

कप्तान : रोकने वाला मैं कौन होता हूं, क्या बिसात है मेरी, किसको है मेरी परवाह !

औरत : सुबह झगड़ा करके पेट नहीं भरा !

कप्तान : कहां-कहां घूमी ? किस-किस के पास रही ? तुझे रोक सका मैं ?

औरत : समझ रही हूं, बैठे-ठाले दिमाग खराब हो गया है ! शर्म करो ! (पास आती है)

कप्तान : (जोर से) खबरदार जो हाथ उठाया मुझ पर ! मैं शोर मचा दूंगा''' (औरत गुस्सा पीकर वहीं बैठ जाती है। विराम। कप्तान शतरंज खेलने लगता है।) इसको बुरा कहती है''' ब्लैडीफूल ! आधी बाजी से तू डाल-डाल मैं पात-पात''' दो चालों में शह'''यह मात। लड़के को क्यों नहीं कहती ! (खेलता है) अब बच। (विराम)

औरत : सुना?

कप्तान : हूं।

औरत : उसके बच्चा हुआ है।

कप्तान : शह!

औरत : उसके घर भी कैसा अंधेर है!

कप्तान : बड़ा। लो। (चलता है)

औरत : पता है?

कप्तान : फिर शह बचो!

औरत : क्या?

कप्तान : क्या?

औरत : सैंतालीस को है।

कप्तान : शह बचो, शह!

औरत : आग लगे आपके शतरंज को!

कप्तान : क्या हुआ?

औरत : बच्चा!

कप्तान : किसके?

औरत : (संकेत से) इसके!

कप्तान : बच्चा···इसके!

औरत : अभी तो, सातवां है।

कप्तान : (चाल चलकर) एक-दो ढाई···(हंसता है) लो शह बचे तुम···(चाल चलकर) फिर शह।

औरत : आग लगे तुम्हारे शतरंज को!

कप्तान : हूं···हूं फीलें पर हाथ मत धरना···नाउड है······

औरत : बुखार नापा? (कप्तान के गले में लटका थर्मामीटर झटकती है।)

कप्तान : (चलता है) ये बच्चे···तो ये लो। (लड़के के कमरे की ओर देखकर) आ आ ही जाए···! (औरत उसके मुंह में थर्मामीटर डालती है। बैठा देती है)

औरत : बस अब जरा देर चुप होकर बैठो!

कप्तान (थर्मामीटर निकालकर) तवे···! (औरत को देखकर चुप हो जाता है)

औरत : देखती हूं, उठा या नहीं···(खिड़की से देखती है) यह छोकरा दिन पर दिन बिगड़ता आ रहा है। (अपने कमरे में चली जाती है।)

कप्तान : (थर्मामीटर निकालकर) ब्लैडीफूल···। हां, चलो (गोट पीटता है) पीट लिया मोहरा? यह बात हुई ना···तो ये लो जनाबली पैदल की शह···क्यों कैसे···हा नाउट ही तो है, ब्लैडीफूल। तुमरी मेरी ही चाल चलती है!···स्वावट··· नाउट···रसगुल्ला··· गुलाबजामुन। गुलाबजामुन मांगता हूं तो दवा पिला देती है, ब्लैडीफूल! (पेट दबाकर जोर से) मर गया! मेरा पेट! मेरा पेट! हाय-राम! मेरा पेट!

औरत . (प्रवेश, दवा की पुड़िया उठाकर देती है।) लो, ये रही। (लड़की पानी लेकर आती है।)

कप्तान : (दर्द को घोटते हुए) नहीं, मैं ठीक हूं। (खांसता है। औरत उसकी पीठ सहलाती है। हांफता है) देखो पैदली हो रही है।

औरत : देख लिया है! सुस्ता के दवा खा लेना। (रस्सी पर पड़ी साड़ी को फैलाकर कमरे की ओर अग्रसर होती है। लड़की से) मुंह क्या ताक रही है, रख दे वहां पर···(लड़की कप्तान के सामने पानी का गिलास रखती है। प्रस्थान)

कप्तान : सुनो, मेरे लिए क्या बना रही हो?

औरत : परवल का रस। (प्रस्थान)

कप्तान : परवल! (मुंह बिचकाता है।) छी.! सुबह परवल! शाम परवल! रात परवल! रोज परवल! पिछले पांच साल से परवल! उकता गया हूं! (मौका देखकर दवा की पुड़िया उठाकर फेंक देता है) स्नेडीफूल! हां तो जनाबजी ये लो मैं यह चला। (चलता है) फिर सोच लो मात हो रही है! ...ये बात है...तो अ...मे लो (चलता है दूसरे हाथ से रुख को सरकता है) खेल खतम! 'रुख यहां पर कहां से आ गया' से मतलब! तुम नहीं, ये पैदली बोल रही है, पैदली! ...फिर वही बात! किस नालायक ने की है बेईमानी, रुख यहीं था। ख्वामख्वाह पैदली हो रही है...(खड़ा हो जाता है) तूने की है बेईमानी! ...तू है बेइमान। नालायक...अभी निकाल बाहर करूंगा! समझ क्या रखा है स्नेडी...

औरत : (प्रवेश, कप्तान को बिठाती है) तुम्हें तो बस भ्रम हो जाता है! जब देखो बैठे-बैठे अनाप-शनाप बकते रहते हो!

कप्तान : मैं अनाप-शनाप बक रहा हूं? मैं! तुम बक रही अनाप-शनाप! तुम्हें हो गया है भ्रम!

औरत : तो बोलो किसको पड़ी है शह? किसको हो रही है पैदली?

कप्तान : लड़के को...(मुर्गा बांग देता है। कहते-कहते रुक जाता है)

औरत : अभी तो वह सोकर भी नहीं उठा है।

कप्तान : (दड़बे के पास जाता है।) हा-हा, आया मेरे बच्चे आया, भूख लगी है...। च् च् च्। (औरत जाने के लिए मुड़ती है) आ कहां रही हो?

औरत : लड़के को चाय देनी है।

कप्तान : इतना ढाह! (घड़ी देखता है) तुमने इसे सुबह का नाश्ता-

पानी देर से क्यों दिया ?

औरत : जैसे गुड़ हो बैठा हमें भी बना रखा है ! सुबह का ख शाम का खाना, रात का खाना, कल का खाना, परसों खाना, अगले हफ्ते का खाना, महीने भर का खाना, सा खाना, खाना…! आदमी का बच्चा भी नहीं खाता इतना

कप्तान : आदमी का ही बच्चा नहीं खाता लेकिन यह मुर्गे का बच्चा जवान। इसकी वजह से सुबह-शाम ये बड़े-बड़े अण्डे तो खा को मिलते हैं। तुम्हारे आदमी का बच्चा क्या देता है ? ए बाजी पूरी नहीं करता, अखबार पढ़कर नहीं सुनाता, इंश्युरेन्स-एजेन्ट को नहीं बुलाता। उसका बोरिया-बिस्तरा…(पेट दबाता है)

औरत : अच्छा-अच्छा, अब बस करो…

कप्तान : वह यहां आयेगा…हाय-राम मर गया ! मेरा पेट ! मेरा पेट !

औरत : (कुर्सी पर बिठाकर) दवा खाई या नहीं ? (कप्तान कराहना बन्द करता है। मुंह को जोर से भींचकर दर्द को छुपाने की कोशिश करता है।) मैं क्या पूछ रही हूं ? (कप्तान मुंह बन्द किए 'खाई-खाई' का संकेत करता है। खांसता है, औरत सहलाती है। उसकी नजर दवा की पुड़िया पर पड़ती है।) सच बताओ - दवा खाई या नहीं ?

कप्तान : (हांफते हुए) कह तो दिया खाई…

औरत : (दवा की पुड़िया उठाकर) यह क्या है ?

कप्तान : (झेंपकर) मुझे याद नहीं।

औरत : खाने की खूब याद रहती है तुम्हें ! (पुड़िया खोलती है।)

कप्तान : इस पेड़ को कटवा दो।

औरत : चलो, मुंह खोलो… (कप्तान ज़ोर से मुंह भींच लेता है।) मैं क्या कह रही हूं… (कान पकड़ती है)
कप्तान : (घड़ी दिखाकर) अभी वक्त कहां हुआ। वैसे ही…
औरत : हां वक्त नहीं हुआ! चलो मुंह खोलो।
कप्तान : कम्बख्त यह घड़ी कितनी तेज़ चलती है! (डरते-डरते मुंह खोलता है। जैसे ही औरत उसके मुंह में दवा डालती है 'ऊ ऽ ऽ' करके मुंह मोड़ लेता है) कड़वी है। (औरत उसका मुंह खोलकर डाल देती है…पानी का गिलास उसके मुंह पर लगाती है, वह गटागट पी लेता है) अब र……र…… रसगुल्ला…
औरत : डाक्टर ने मना किया है।
कप्तान : डाक्टर को झाड़ू मारो!
औरत : मैं बिना डाक्टर के…
कप्तान : मैं नहीं लूंगा दवा! फेंक दूंगा कम्बख्त को……मैं बीमार हूं जान-बूझकर सताती है। (रोने लगता है।) मेरा कोई नहीं है! मुझे ज़हर दे दिया… उठाले! मुझे उठाले…! (छाती पीटता है।)
औरत : चुप रहो! (और ज़ोर से रोता है।) अब मैं क्या करूं!
कप्तान : नहीं बोलता…जाओ, जाओ, यहां से। (रोता है)
औरत : अच्छा दूंगी-दूंगी!
कप्तान : सच…
औरत : नहीं तो चैन लेने दोगे मुझे।
कप्तान : (उसका हाथ पकड़कर) तुम कितनी अच्छी हो।
औरत : बस-बस रहने दो, ज़रा भी मन की नहीं होगी तो मेरा श्राद्ध करने लगोगे…मुझे सताती है! ज़हर दे दिया! (जाना

चाहती है। वह उसको अपने पास खींच लेता है।) तुम्हें पकड़े थोन है,…छोड़ो पानी बन्द हो जायगा।

कप्तान : सुनो (बाहुपाश से मुक्त। भागी जाती है। खड़ी उसे निहारती है) सुबह गुसलखाने की तस्वीर नहीं होनी चाहिए। उसमें बराबर पानी बहना चाहिए।…इस पेड़ को कटवा दो।

औरत : क्यों ?

कप्तान : अच्छा नहीं लगता।

औरत : तुम्हारे मनसूबे मेरी समझ में नहीं आते।

कप्तान : एक मकान बनवाने की सोच रहा हूँ…

औरत : मकान ?

कप्तान : दुमंजला…

औरत : दुमंजला ?

कप्तान : तीमंजला। खिड़की… और-और गुसलखाने—एक इस कमरे में, एक उस कमरे में, हर कमरे में, गुसलखाने तो होने ही चाहिए, सुनो ऊपर की दूसरी-तीसरी मंजिलों को किराये पर उठा देंगे। अच्छा किराया आया करेगा। किराये को जमा कर देंगे—इस बैंक में उस बैंक में। फिर एक और मकान बनवायेंगे, उसके बाद एक और मकान…एक और मका…(थक-सा जाता है निश्वास से।) हा…राम…

औरत : उन मकानों में कौन रहा करेगा ?

कप्तान : क्यों…मैं रहूँगा, मैं।

औरत : और ?

कप्तान : और…(उसे देखकर रुक जाता है।)

औरत : हाँ, और…(मुर्गे की माँग)

कप्तान : तुम्हारे साथ एक बार और ब्याह करने को मन

औरत : नहीं।

कप्तान : हां। फिर इस मुर्ग की तरह बार-बार···

औरत : नहीं···

कप्तान : हां फिर···

औरत : इस 'बार-बार' का एहसास तब नहीं हुआ।

कप्तान : सच-फिर···

औरत : कौन रहेगा उन दुमंजले, तिमंजले मकानों में ?

कप्तान : मैं रहूंगा।

औरत : कौन करेगा गुसलखानों को इस्तेमाल? (कप्तान के बाल पकड़ लेती है।)

कप्तान : मैं करूँगा।

औरत : मुझे तबाह करके रख दिया।

कप्तान : (शोर मचाता है।) देखो-देखो! खबरदार जो मुझ पर हाथ उठाया तो (लड़की के हाथ से बर्तन गिरते हैं। औरत अलग हट जाती है। लड़की सहम जाती है।)

लड़का : (अन्दर से) अरे बस करो, ज़रा सो लेने दो! (क्षणिक विराम!)

औरत : अब मुंह क्या ताक रही है, उठाती क्यों नहीं?

लड़का : (ज़ोर से) बन्द करो ये बकवास!

कप्तान : बाज़ा हो जाय बाज़ी पूरी!

(औरत का प्रस्थान। लड़की बर्तन धोने नल पर जा बैठती है। विराम। कप्तान शतरंज खेलने लगता है।) इसका हिसाब-किताब समझ में नहीं आता। ऐसा···पहले पट्ठा [illegible] —(लड़की से) सुन···देख तो लड़के ने

कप्तान : तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए।

औरत : मेरा हक भी तुम्हारे बराबर है!

कप्तान : (जोर से) नहीं है, तुम्हारा कोई हक नहीं है!

लड़का : (अन्दर से) धीरे बोलो!

औरत : मैं तुम्हारी पत्नी हूं!

कप्तान : कुछ नहीं हो!

लड़का : (अन्दर से) भगवान के लिये बन्द करो ये हल्ला-गुल्ला!

औरत : मुझे ब्याह के नहीं लाये!

कप्तान : नहीं! यह भाग गयी थी किसी के साथ!

औरत : यह ग़लत है!

कप्तान : यह सही है! मैं जानता हूं।

औरत : (कप्तान का गला पकड़ लेती है) तुम कुछ नहीं जानते'''

कप्तान : मैं सब जानता हूं'''

औरत : और प्रलाप करते हो'''

कप्तान : (उसके बाल पकड़ लेता है) देखो-देखो लोगो माई वाइफ इज बीटिंग मी! ब्लॅडीफूल! रण्डी!'''समझती है मैं डर जाऊंगा'''

औरत : शक से कलपते रहते हो'''कौन हूं मैं'''

कप्तान : मार दिया! मुझे जान से मार दिया! छिनाल'''

औरत : क्या लगती हूं तेरी'''

कप्तान : कुछ नहीं, तू मेरी कुछ भी नहीं है! दुश्मन है! अनाप-शनाप पैसा उड़ाती रहती है मेरा! लूटने आई है! निकल जा यहां से! ब्लॅडीफूल (धक्का देता है। बड़बड़ाता हुआ लकड़ी उठा लेता है।) आज मैं तेरा हिसाब-किताब करके छोड़ूंगा!

औरत : ले मार, करदे मेरा अन्त !···

कप्तान : निकल !

औरत : लुज-पुज अपनी गन्दगी में घिसट-घिसट के मर रहा है··· चली जाऊंगी तो पानी देने वाला भी नहीं मिलेगा !

कप्तान : अरे जा, डराती है मुझे ! कभी कहती है···यह मत खाओ, पेट दुखेगा···तबीयत खराब हो जायगी। कभी कहती है फला बीमार था आज मर गया। बाहर मत जाना अन्धाधुन्द गाड़िया चलती हैं···जैसे मैं विकलांग हूं···

औरत : और क्या समझते हो !

कप्तान : रहने-दे, रहने-दे ! मैंने भी ज़िन्दगी पहाड़ियों पर गुज़ारी है। समझती है मैं कुछ नहीं कर सकता। जा रहा हूं, एवरेस्ट पर्वत को। (रोब से अपना पर्वतारोही का झोला खोलता है। सांस चढ़ जाता है।) दक्षिण-पश्चिम से चढूंगा। (हांफते हुए) ···आक्सीजन का आला··· बस ज़रा तबीयत ठीक हो जाय, जाकर ले आऊँगा। (थकान के कारण झोला नहीं खोल पाता) ज़रा खोल इसे ··समझती है मैं इसके बिना कुछ कर ही नहीं सकता, जैसे इसी के सहारे···खोल इसे (औरत झोला खोलकर बेंदी के पास जाकर टूटी प्लेटें उठाती है।) खबरदार ? मत छूना उसे।

औरत : (बेंदी की ओर संकेत करके) पता है, पड़ोस में कैसी चर्चा है इसकी ?

कप्तान : कैसी ?

औरत : 'लाम से मारा हुआ सोना-चांदी इसमें गाड़कर गुप्त कर रखा है, मेरे डर से।' मरा जो भी आता है टकटकी बांधे देखता रहता है, इसे।

जाना चाहती है'''उसके पीछे-पीछे जाता है) हां, फ्रांस का किस्सा'''पहाड़ी इलाका, जाड़ो की वो रात, हाड़ कंपा देने वाली सर्दी'''यह पेड़ तुम्हें कैसा लगता है ? (... जाना चाहती है, कप्तान रोक लेता है) हां, पांच-पांच सेर की हेलमेट पहने'''दस-दस सेर की राइफ़ल लिये हम लोग उन पहाड़ियों में'''(हंसता है) साल पांच-छ: की बात है हवालदार लाखन शाम से लौट रहा था'''नहीं जा रहा था'''हां जा ही रहा था'''

औरत : नहीं लौट रहा था।

कप्तान : तुम्हें कैसे मालूम ?

औरत : तुम्हीं ने तो बताया था।

कप्तान : वह अब भी यहां के चक्कर लगाता है'''किस लिये ?

औरत : शक को लेकर ही मरोगे ! (जाना चाहती है वह रोक लेता है)

कप्तान : हां, फ्रांस के पहाड़ी जंगलों में हम पांच सेर की हेलमेट, दस सेर की राइफ़ल (हंसता है) छटांक-भर की हेलमेट पहने पाव-भर की राइफ़ल कन्धे पर लटकाये शेखी-बघार रहा था। पता है कैसी राइफ़ल थी वो'''एक बटन था उस पर, छोटा-सा। जरा-सी उसे दबाओ खट से खुल जाती थी ! सेकेण्ड भर में, सौ गोलियां भरकर डग्-डग्-डग् दाग लो ! (हंसता है) राइफल नहीं बच्चों का खिलौना हो गया ! कहता था''' कप्तान साहब अब तो फ्रन्ट पर घर से ज्यादा आराम है। सुबह उठो तो चाय-नाश्ता तैयार, दिन को खाना तैयार, रात का खाना तैयार'''कभी छोटा खाना, कभी बड़ा खाना बस खाना ही खाना। एक से एक बढ़िया खाना। पीने को

पॉकेट की···सुनो। (उसको देखती है) एक घूंट रम···

औरत : डाक्टर ने···

कप्तान : झाड़ू मारो डाक्टर ब्लैडीफूल को ! मलेरिया में टी० बी० इन्जेक्शन लगाता है·· वो तो कहो मैं रामभक्त था जो बच गया।

औरत : फ्रांस का किस्सा, पहाड़ी इलाका, जाड़ों की रात···

कप्तान : हां···जाड़ों की रात। दस दिन से मुसलसल बरस रहा था। हम लोग, हम लोग खंदकों में बिना खाये—बिना पीये···

औरत : बिना खाये पिये ?

कप्तान : कीचड़ से लथपथ हम···

औरत : कीचड़ से लथपथ ?

कप्तान : कमर-कमर तक पानी···

औरत : कमर-कमर तक पानी···

कप्तान : रोंगटे खड़े हो जायेंगे, रोंगटे। सुनो बस एक घूंट···

औरत : एक बूंद भी जहर है तुम्हारे लिए। हां, कहो।

कप्तान : घुप्प अंधेरा··· नहीं पहले पानी को दो···

औरत : नहीं, फिर क्या हुआ ?

कप्तान : नहीं, पहले दो···

औरत : (रुककर) ठीक है मत कहो (औरत को घूरता है) क्या है—घूरते क्यों हो ?

कप्तान : तुम लौट क्यों आई ?

औरत : तुम बाज़ नहीं आओगे !

कप्तान : हां, एक बार मैं छुपकर सिगरेट सुलगा रहा था कि 'ठाई ऽऽ' से गोली मेरे घाव पर पड़ी···

औरत : *(एक दम से) उई मां ! (खड़ी हो जाती है)*

कप्तान : पर मेरा बाल भी बाका नहीं हुआ···

औरत : कैसे ?

कप्तान : मैं दो हेलमेटें पहना करता था। हुआ ये कि ऊपर की हेलमेट तो साफ उड़ गई और मैं दुबककर सिगरेट पीता रहा।

औरत : तुमने ठीक किया - अच्छा होता, तुम सदा दुबके ही रहते।

कप्तान : क्या मैं गधा हूं ? अरे मैं तो कभी खन्दक से बाहर झांकता ही नहीं था। मेजर कप्तान अपने दोस्त थे, दोस्त। मेरी बात मानते थे। दो-चार जवान अक्सर मेरे साथ शतरंज खेला करते थे। एक दिन मेजर बोला···सूबेदार दुश्मन सिर पर सवार है और तुम शतरंज जमाए बैठे रहते हो। यह सब यहां नहीं चलेगा, डेम इट।"मैंने कहा 'बहुत अच्छा सर' पर सर शतरंज तो लाम का ही खेल है।" उसने पूछा—"लाम का खेल ?" इससे अफसर और जवान नाकाबन्दी आसानी से सीख जाते हैं। दुश्मन की चालें और उनकी काट एकदम समझ में आ जाती है···और मैंने उसे बैठाकर सब समझा दिया। बस तब से वह मुझसे कुछ कहता ही नहीं था। था तो वो मेजर अंग्रेज, पर था नम्बर एक गधा। लाम में हमारी जीत हुई। सब की तरक्की हुई। मैं सूबेदार से कप्तान हो गया। सार्टिफिकेट और तमगे मिले। अखबारों में फोटो के साथ हमारे नाम छपे। अरे तुम्हें क्या समझाना, अन्दर कमरे में सजे फ़ोटो तुमने रोज़ ही देखती हो, क्यों ? पर मन की मन में रह गई बेवकूफ !

औरत : बेवकूफ़ी मन का और क्या होगा ?

कप्तान : (ज़ोर से) ऐसी तैसी तेरी ! पूरी पूरी बात तो सुनती नहीं है···! बेवकूफ मुझे रिटायर कर दिया। एक दिन भी

कमांडर बनने को नहीं मिला।

औरत : शायद नहीं हुआ।

कप्तान : (सर्टिफिकेट दिखाकर) पढ़ इसे…

औरत : हजार बार पढ़ चुके हो…

कप्तान : कर्नल का दिया हुआ है, अंग्रेज था वो, कोई हिन्दुस्तानी अफसर नहीं था सर्टिफिकेट मलीन नहीं है।

औरत : इसीलिए तुम्हें मेरे लिए पसंद किया।

कप्तान : नहीं, किसी ने तुमसे बीस साल तक शादी नहीं की थी।

औरत : देखो फिर तुम…

कप्तान : (औरत उठती है उसका हाथ पकड़कर) और तुमने।

औरत : हटो!

कप्तान : (चुटकी लेकर) पसंद तो तुमने भी किया ही था!

औरत : मैं क्यों करती?…

कप्तान : मैं जवान जो लगता था।

औरत : मैंने तो तुम्हें देखा भी नहीं था।

कप्तान : झूठ बोलती हो!…

औरत : तुम्हीं हमारी गली के चक्कर काटा करते थे। उचक-उचक कर देखा करते थे।

कप्तान : (गोद में बिठा लेता है) तुम भी तो…मुस्कराकर, खिल-खिलाकर मुझे मनाया रिझाया करती थी।

औरत : लगते तो जवान ही थे (जाना चाहती है)।

कप्तान : (उसके पीछे जाते हुए) और क्या, अब भी वैसा ही लगता हूं। (औरत को बाहुपाश में लेना चाहता है)।

औरत : (कटुता से) लगने से क्या होता है… (मुंह फेर लेता है। दीर्घ विराम, औरत उसके पास आती है।)

कप्तान : (ज़ोर से) तुम जताना क्या चाहती हो, मैं बीमार हूं ! पजामे-बिस्तर बिगाड़ता हूं ! कचरे के ढेर की तरह सड़ांद में पड़ा रहता हूं ! कुछ कर नहीं सकता ! यही ना ! मैं बीमार हूं, तुम्हें मेरा ख्याल रखना चाहिए, सेवा-टहल करनी चाहिए, खाने-पीने को देना चाहिए। यह नहीं कि मेरी बेचारगी का मज़ाक उड़ाओ ! मुझ पर फब्तियां कसो ! नफ़रत करो !

औरत : यह तुम्हारा वहम है।

कप्तान : तो फिर मुझे प्यार करो।

(औरत उसे चूमना चाहती है। लड़की आकर औरत से दूध के उबलने का संकेत करती है)

औरत : बदतमीज़ छोकरी ! (लड़की संकेत करती है) उबल गया। क्या दूध गिरा दिया ? (लड़की जाने के लिए मुड़ती है। उसके बालों से रिब्बन निकालती है) ऐसा फ़ैशन ! लगता है तेरे भी दिन आ गए ! लड़की का फ़ैशन करना ! चल (उसे धक्का देती है। दोनों का प्रस्थान)।

कप्तान : सुनो, मेरी चाय में मलाई भी डाल लाना। (शतरंज खेलता है) ओ मैं बचा···तो मैं ये चला फिर यह···तो वो ये बचा··· और मैं ये चला···ये मात ! (हंसता है) कल का छोकरा खलीफा समझता है। (तेज़ी से मुहरों को उनकी जगह पर रखता है, लड़के को पुकारता है) आ जा (फिर चालें सोचता है। फिर पुकारता है। लड़के के उत्तर न देने पर खीझ उठता है। उसके कमरे के पास जाकर) ब्लैडीफूल। बदतमीज़ छोकरा। जवाब नहीं देता। समझ क्या रखा है।

लड़का : (खिड़की से) चीख़ क्यों रहे हो।

कप्तान : दाढ़ी-मूंछ ! कोई बात नहीं···हो जाए बाज़ी पूरी।

अपना होता तो···

कप्तान : नहीं हुआ तो मेरा क्या कुसूर है ?

औरत : तो मेरा कुसूर है ?

कप्तान : तू भागी क्यों ?

औरत : तुम से घबराकर।

कप्तान : तो फिर न आती लौटकर।

औरत : अदालती कार्यवाई मैंने की थी ?

कप्तान : तो क्या हुआ, लड़के के खिलाफ भी तो अदालती कार्यवाई हुई थी वह तो लौटकर नहीं गया।

औरत : लड़के से तुमको मतलब ?

कप्तान : मुझसे तुझको मतलब ?

औरत : मेरा यह लोक-परलोक बिगाड़ा है।

कप्तान : तो अब चली जा···सुधार ले अपना लोक-परलोक ! यहां किसको सुना रही है !···

औरत : सब दस-दस पहरे बिठा रखे थे !

कप्तान : तू थी ही ऐसी, कब क्या गुल खिलाए ?

औरत : मैं ऐसी थी तो क्यों की मुझसे शादी ?

कप्तान : अपने बाप से पूछ जो सड़े आम के रुपये डकार गया। खबरदार अगर मुझ पर हाथ उठाया तो (औरत के बाल पकड़ लेता है) मैं और मरा हुआ। (चीखता है, थाम की प्याली गिरकर टूट जाती है) देखो लोगो !···माई वाइफ, दिस ब्लैडी बिच इज किलिंग मी···मार दिया ! मार दिया ! (रोता है, झगड़ा करते हुए दोनों गिरते हैं। दीर्घ मौरवता। औरत सुबक कर रोती है। समझाता है।) विवाह नीमा उसके हाथ होने हैं।

औरत : सत्यानाश हो उनका !

लड़का : हाथ जोड़ता हूं, मुझे कुछ देर तो सोने दो !

कप्तान : शह, यह मात।

लड़का : (ज़ोर से) नहीं खेलना है।

कप्तान : आख़िरी बाज़ी फिर···

लड़का : चुप होकर बैठिए ! (लड़का चला जाता है।)

कप्तान : निकाल बाहर करूंगा ! वह···वह क्या नाम उस भले आदमी का···पिछले कई दिनों से चक्कर काट रहा है। मैंने भी हां कह दिया है। आज ही तेरा···

औरत : (चाय लिए प्रवेश) क्यों बड़बड़ा रहे हो ? कौन चक्कर काट रहा है ?

कप्तान : वही, वह जो यहां आता है शतरंज खेलने। जो मिठाई देता है, लड़की को, अख़बार पढ़कर सुनाता है मुझको, इंशुअरेन्स एजेन्ट को खाने वाला है···

औरत : नाम मत लो उसका !

कप्तान : वह यहां आएगा !

औरत : फिर···

कप्तान : यहां रहेगा !···

औरत : यहां कहां रहेगा ?

कप्तान : (संकेत से) उस कमरे में।

औरत : और लड़का कहां जाएगा ?

कप्तान : भाड़ में !

औरत : भाड़ में जाएगा वो, भाड़ में···

कप्तान : देखो···देखो···मैं···मैं कहता हूं··· तुम···तुम होती कौन हो मेरे इरादे में टांग अड़ाने वाली।

औरत : तो तुम कौन होते हैं लड़के को बुरा-भला कहने वाले ? अगर

अपना होता तो···

कप्तान : नहीं हुआ तो मेरा क्या कुसूर है ?

औरत : तो मेरा कुसूर है ?

कप्तान : तू भागी क्यों ?

औरत : तुम से घबराकर।

कप्तान : तो फिर न आती लौटकर।

औरत : अदालती कार्यवाई मैंने की थी ?

कप्तान : तो क्या हुआ, लड़के के खिलाफ भी तो अदालती कार्यवाई हुई थी··· वह तो लौटकर नहीं गया।

औरत : लड़के से तुमको मतलब ?

कप्तान : मुझसे तुझको मतलब ?

औरत : मेरा यह लोक-परलोक बिगाड़ा है।

कप्तान : तो अब चली जा···सुधार ले अपना लोक-परलोक ! यहां किसको सुना रही है !···

औरत : सब दम-दस पहरे बिठा रखे थे !

कप्तान : तू थी ही ऐसी, कब क्या गुल खिलाए ?

औरत : मैं ऐसी थी तो क्यों की मुझसे शादी ?

कप्तान : अपने बाप से पूछ जो सड़े आम के रुपये डकार गया। खबरदार अगर मुझ पर हाथ उठाया तो (औरत के बाल पकड़ लेता है) मैं शोर मचा दूंगा। (चीखता है, चाय की प्याली गिरकर टूट जाती है) देखो लोगो !···माई वाइफ, दिस ब्लेडी बिच इज किलिंग मी···मार दिया ! मार दिया ! (रोता है, झगड़ा करते हुए दोनों गिरते हैं। दीर्घ नीरवता। औरत सुबक कर रोती है। सन्नाटा है।) विवाह नीमा उसके हाथ होते हैं।

औरत : सत्यानाश हो उनका !

कप्तान : (अपने व्यवहार पर दुखी होकर) क्या दिन बना दिया ?···
कहते हो···पहले तो तू ही···अच्छा तू ही बता क्यों ऐसा होता है ? ऐसा··· ऐसा तो होता ही नहीं, कभी हुआ ही नहीं ···बहुतों के साथ नहीं हुआ। अब करना पड़ता है, बहुत कम करना पड़ता है। क्या तू समझती है···मुझे दुख नहीं लगता ? (औरत सुबकने लगती है, वह पहले रुक जाता है) ठीक है, नहीं बोलूंगा (मौन)···मैं कभी नहीं बोलूंगा··· देख क्या है···मैं तो···

औरत : अगर कभी वह चला गया तो···

कप्तान : वह··· वो बाजी पूरी क्यों नहीं करता।

औरत : तुम बेईमानी करते हो।

कप्तान : वह (दाढ़ी सुलझा कर) यों ही क्यों करता है ? बटवाता क्यों नहीं ?

औरत : आपको क्या कष्ट देता है ?

कप्तान : वो अखबार पढ़कर क्यों नहीं सुनाता ?

औरत : तुम, सुनो तब ना।

कप्तान : वो इंशुअरेन्स एजेन्ट को क्यों नहीं लाता ?

औरत : तुम्हारा इंशुअरेन्स नहीं हो सकता।

कप्तान : (चिढ़कर) वो··· वो मैं निकाल बाहर···

औरत : फिर वही !

कप्तान : तो फिर उससे कहो कि बाजी पूरी करे। (उठकर पुकारता है) आ जा।

औरत : रात अबेर से सोया है। (बैठाती है) उसे वक्त कहां ?

कप्तान : (जोर से) रात अबेर से आना ! देर-देर तक लड़की को गीत

औरत : भगवान के लिए धीरे बोलो !

कप्तान : (बेचारगी से) ज़रा-सी देर की बात है'''शह, ये मात।''' फिर कभी नहीं कहूंगा'''

औरत : (लड़के के कमरे में झांकती है। पुकारती है) बेटे ! (कप्तान मोहरें लगाता है) उठ गया बेटा।

लड़का : (अन्दर से खीजकर) मैं सैंकड़ों बार कह चुका हूं कि मुझे सुबह-सुबह तंग मत किया करो।

औरत : सुबह की चाय पड़ी-पड़ी ठण्डी हो गई ! मैं फिर बना के लाई हूं !

लड़का : (अन्दर से ही) तो रख दो फिर। आइन्दा मत बनाना मेरे लिए। (कप्तान मन ही मन खुश होता है। उबासी लेता है। ऊंघता है।)

कप्तान : भूल जाएगा खेलना। ('छोटा-सा बलमा मेरे आंगना में गिल्ली खेले' गुनगुनाता है। औरत उसको कुर्सी झुलाती है। 'छोटा-सा बलमा' लोरी-सी गाती है। कप्तान सो जाता है। औरत कमरे में चली जाती है। लड़की चाय का प्याला ले के आती है। प्याला चौकी पर रखती है। दालान को बुहारती है। स्थिर हो मुस्कराती है। लड़के को खिड़की से देखती है। कप्तान नींद में बड़बड़ाता है। लड़की झट दालान को बुहारने लगती है।)

कप्तान : '''आंगना में'''आगना में''' (लड़की उसको सोया जानकर फिर लड़के को खिड़की से देखती है। मुस्कराती है। सिर से 'नहीं' का संकेत करती है। 'शह, ये मात'''कप्तान बड़बड़ाता है। लड़की तनिक घबराती है, फिर लड़के को देखने लगती है। कप्तान ज़ोर से बड़बड़ाता है। लड़की भागकर दालान

कप्तान : (अपने व्यवहार पर दुखी होकर) अच्छा मैं ? क्या कि: बहू ! तो·· बहू तो तू ही··· अच्छा तू ही बता फ. होता है ? ऐसा · ऐसा तो होता ही नहीं, कभी हुआ ···बहुओं के साथ नहीं हुआ। बरत करना पड़ता है बरत करना पड़ता है। क्या तू समझती है···मुझे दु लगता ? (औरत मुस्कराने लगती है, वह बहू ने ठक क ठीक है, नहीं बोलूगा (मौन)···मैं कभी नहीं बोलूंगा· क्या है···मैं तो···

औरत अगर कभी वह पता चला तो···

कप्तान : वह·· वो बाकी पूरी क्यों नहीं करता।

औरत : तुम बेईमानी करते हो।

कप्तान : वह (दाढ़ी खुजला कर) यों क्यों क्यों करता है ? बदमाश नहीं ?

औरत : आपको क्या कष्ट देता है ?

कप्तान : वो अखबार पढ़कर क्यों नहीं सुनाता ?

औरत . तुम. तुमो तब ना।

कप्तान . वो इन्शुरेन्स एजेन्ट को क्यों नहीं लाता ?

औरत : तुम्हारा इन्शुरेन्स नहीं हो सकता।

कप्तान : (बिगड़कर) वो·· वो मैं निकाल बाहर···

औरत : फिर वही !

कप्तान : तो फिर उससे कहो कि बाकी पूरी करे।
है) आ जा।

औरत : रात अबेर से सोया है। (बताती है) उसे

कप्तान : (ज़ोर से) रात अबेर से आना ! मेर
सुनाना ! इनके लिए वक्त आ· ।

क्या करूँ ! एक मिनिट में सारी प्लेट चट कर दी। (कप्तान से प्लेट छीनती है। वह नहीं देता) अब कोई पूछे, मांगकर तुम खाते हो, चुराकर तुम खाते हो, छीना-झपटी से तुम खाते हो ! मेरी जो मुश्किल हो गई है ! (दूसरी प्लेट उठाती है ''लड़की से) ले री, उस छोकरे को देकर आ ! (प्लेट देती है) अगर अब भी खर्राटे भर रहा होगा तो कान खींचकर उठा देना ! इस वक्त तक सोने वाला यह लड़का बनेगा या बिगड़ेगा ! (लड़की को खड़ी देखकर) कान भी बहरे हो गए हैं क्या ! (लड़की जाती है। लड़के के कमरे के पास रुक जाती है। मुस्कराती है। सिर नीचा कर लेती है। धीरे-धीरे चली जाती है)

कप्तान : (उंगली चाटते हुए) सुनो, कल सुबह गुच्छी का पुलाव।

औरत : आज का दिन तो काट लो, जब देखो साल भर के पकवानों की लिस्ट जबान पर लिए रहते हो ! (जाने के लिए अग्रसर होती है।)

कप्तान : मैंने भी 'हां' कह दिया है !

औरत : 'हां' कह दिया ?

कप्तान : (प्लेट बढ़ाकर) जरा और देना।

औरत : नहीं है।

कप्तान : जरा-सी, तुम बड़ी अच्छी हो।

औरत : नहीं है !

कप्तान : है'''है मुझे मालूम है।

औरत : है तो ले लो !

कप्तान : हां, हां ले लूंगा !

औरत : कहां से ले लोगे ?
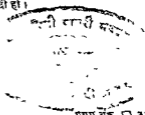
बुड़बड़ाने लगती है) टन-टो-हाँ, हूहू''' (झटका है, चीजों पर रखा प्याला उससे छिटककर टूट जाता है। लड़की कप्तान को देखती है जो अब भी नींद में हिल रहा है। औरत का तौलिया लिए प्रवेश। लड़की घबरा कर औरत को देखती है।)

औरत   अब क्या तोड़ दिया? (लड़की कप्तान के सामने टूटे हुए प्याले को देखती है। औरत चीजों पर नाश्ता रखती है। टूटे हुए प्याले के टुकड़ों को उठाती है।)

कप्तान   (नींद में) इस बार मलेरिया ठीक हो जाए।

औरत   अनाप-शनाप बातें बन्द करो, ठीक हो जाएगी।

कप्तान · (उठते हुए) क्या है···क्या लाये हो?

औरत   प्याला तोड़ दिया!

कप्तान   किसने?

औरत   तुमने!

कप्तान : मैंने?

औरत : हाँ।

कप्तान : मैं क्यों तोड़ूँगा!

औरत : तुम बड़बड़ा भी नहीं रहे थे!

कप्तान : मैं क्यों बड़बड़ाऊँगा?

औरत : तो मैं बड़बड़ा रही थी!

कप्तान : तो मैं बड़बड़ा रहा था! (क्षणिक विराम) मैं क्या बड़बड़ा रहा था?

औरत : अपनी तबियत को रो रहे थे। (औरत टूटे हुए प्याले को उठाती है। कप्तान उसकी नज़र बचाकर प्लेट उठाकर अति-जल्दि नाश्ता खाने लगता है।) दिन भर चिड़ियों का-सा चारा चुगते रहते हो और फिर (उसको खाते देखकर) अब मैं

औरत : अचानक मुझे छोड़कर टहलने क्यों लगते थे ?
कप्तान : तब मैं गांधीवाद था। (औरत प्लेटें उठाकर जाने के लिए अग्रसर होती है) सुनो···
औरत : मुझे काम करना है ! तुम्हारे कपड़े-बिस्तर धोने हैं !
कप्तान : एक मिनिट।
औरत : अब रहने दो अपना प्यार !
कप्तान : प्यार ! कौन नालायक़ करता है तुम्हें प्यार !
औरत : ऐसा है।
कप्तान : बूढ़ी घोड़ी, लाल लगाम !
औरत : बन्दर कहीं के !
कप्तान : क्या !
औरत : (हंसकर) बन्दर ! बन्दर !
कप्तान : (रूठकर) नहीं बोलता जाओ ! (औरत जाने लगती है) मैंने भी 'हां' कह दिया !
औरत : 'हां' कह दिया है ?
कप्तान : उससे।
औरत : लड़का कहां जायगा ?
कप्तान : भाड़ में !
औरत : भाड़ में जाओ तुम ! भाड़ में जाय वो !
कप्तान : देखो···देखो, जबान पर लगाम दो, नहीं तो···!
औरत : नहीं तो क्या···
कप्तान : निकाल बाहर करूंगा !
औरत : अरे जाओ, 'निकाल बाहर करूंगा !' एक तुम्हारा ही राज है यहां !
कप्तान : नहीं तो तुम्हारा है !

कप्तान : जहां तुमने छुपा के रखा है।

औरत : कहां रखा है ?

कप्तान : बड़ी अलमारी के पीछे, छोटे भगोने में।

औरत : मजाल है कि कोई चीज बच जाय तुम्हारी नजरों से !

कप्तान : देखा मैं तुम्हारी सब चालाकी समझता हूं।

(कमरे में लड़की की कुनमुनाहट। दोनों कमरे की तरफ़ देखते हैं। जाकर खिड़की से झांक्ते हैं। मुस्कराते हैं। एकदम हट कर खड़े हो जाते हैं, जैसे कुछ देखा ही नहीं। लड़की का प्रवेश—होठों पर हाथ हैं। मुंह पर मुस्कान। कप्तान व औरत को देखकर नजरें नीची कर लेती है। झाड़ू उठाकर तेजी से प्रस्थान। दोनों एक-दूसरे को देखकर मुस्कराते हैं।)

औरत : बदतमीज छोकरी !

कप्तान : ये रोज ऐसा ही करते हैं।

औरत : चुप रहिये !

कप्तान : तुम भी तो ऐसा करती थी। (औरत को बाहुपाश में ले लेता है)

औरत : कैसा ?

कप्तान : तुम बताओ।

औरत : नहीं तुम बताओ।

कप्तान : पहले सजाना, फिर कुनमुनाना···मुझे ऐसा लगता था···

(क्षणिक मौन)

औरत : कैसा लगता था ?

कप्तान : ऐसा लगता था···

औरत : बताओ ना···कैसा लगता था ?

: ऐसा लगता था··· जाने कैसा।

औरत : अचानक मुझे छोड़कर टहलने क्यों लगते थे ?

कप्तान : तब मैं गांधीवाद था। (औरत प्लेटें उठाकर जाने के लिए अग्रसर होती है) सुनो···

औरत : मुझे काम करना है ! तुम्हारे कपड़े-बिस्तर धोने हैं !

कप्तान : एक मिनिट।

औरत : अब रहने दो अपना प्यार !

कप्तान : प्यार ! कौन नालायक करता है तुम्हें प्यार !

औरत : ऐसा है।

कप्तान : बूढ़ी घोड़ी, लाल लगाम !

औरत : बन्दर कहीं के !

कप्तान : क्या !

औरत : (हंसकर) बन्दर ! बन्दर !

कप्तान : (चढ़कर) नहीं बोलता जाओ ! (औरत जाने लगती है) मैंने भी 'हां कह दिया !

औरत : 'हां' कह दिया है ?

कप्तान : उससे।

औरत : लड़का कहां जायगा ?

कप्तान : भाड़ में !

औरत : भाड़ में जाओ तुम ! भाड़ में जाय वो !

कप्तान : देखो···देखो, जबान पर लगाम दो, नहीं तो···!

औरत : नहीं तो क्या···

कप्तान : निकाल बाहर करूंगा !

औरत : अरे जाओ, 'निकाल बाहर करूंगा !' एक तुम्हारा ही राज है यहां !

कप्तान : नहीं तो तुम्हारा है !

औरत : ज़रा निकालिए !

कप्तान : हां, हां, निकालूंगा !

औरत : निकालिए फिर !

कप्तान : हां, निकालूंगा ! निकालूंगा ! निकालूंगा ! लो बस !
(लड़के का कागज़-कलम लिए प्रवेश। दोनों चुप उसे देखते हैं। लड़का दूसरी तरफ जाता है। कप्तान औरत को इशारा करता है कि लड़के से शतरंज खेलने को कहे।)

औरत : बेटा चाय पी ली ?

लड़का : हूं !

औरत : गर्म थी ?

लड़का : नहीं। (कविता गुनगुनाता है)

औरत : (लड़के को गौर से देखकर) शिव-शिव ! कितना दुबला गया है ! सेहत का रत्ती भर ध्यान नहीं ! (विराम) रात अबेर-कुबेर से आना, ठंडा खाना खाना, देर-देर तक लिखना, सुबह इतने दिन चढ़े बिस्तर पर ही चाय पी के उठना—
(लड़का तंग आकर औरत को देखता है। विराम। गुनगुनाता है।) मैं कहे देती हूं अगर अब से अबेर-कुबेर की तो…!
(लड़का औरत को देखता है…औरत चुप हो जाती है—फिर गुनगुनाता है।)

कप्तान : हो जाए बाज़ी पूरी !

लड़का : (उसी भाव में) नहीं।

कप्तान : क्या कहा…! (औरत रोक लेती है। लड़के का गुनगुनाते बाथरूम को प्रस्थान) मैं कहता हूं छुट्टी करो इसकी !

औरत : (चुप कराती है) चुप भी करो !

कप्तान : *यह बड़ा खतरनाक है…सुनो !*

समझले, फ़ैशन करने वाली और चटोरी लड़कियां अच्छी नहीं होती।

लड़का : इसमें क्या फ़ैशन···

औरत : चुप रह ! तूने नाश्ता किया या नहीं ?

लड़का : कर लिया।

औरत : चल री ! (लड़के से) मैं तेरे लिए फल भेज रही हूं, खा लेना।

लड़का : क्यों तुम मुझे बार-बार इस तरह परेशान करती हो ! मुझे कुछ खाना-वाना नहीं है !

औरत : अरे जा-जा खाना-वाना नहीं है···बहुत ज़बान चलाना सीख गया है। हड्डी-हड्डी रह गया है। (लड़की से) मुंह क्या देख रही है···चल···(लड़के को देखती) हूं ऊं ! सब समझती हूं। चल ! (मुस्कराती है दोनों का प्रस्थान···विराम)

लड़का : अजब ढंग है प्यार का···! (गुनगुनाता है। लड़की का फल लिए प्रवेश। ग़ौर से उसे देखता है। बैठाता है। लड़की शर्म से कुनमुनाती है। एकाएक खड़ी होकर फल लड़के के आगे कर देती है···वह उसे फिर बिठा देता है)
सुन, मेरी तरफ़ देख। (कनखियों से लड़की देखती है···कविता दिखाकर) सुनेगी··· तेरे मूक सौन्दर्य पर है (गाकर सुनाता है कोई भी उपयुक्त कविता ली जा सकती है।)

(औरत और कप्तान आते हैं। छुपकर दरवाज़े से देखते हैं, मुस्कराते हैं। पीछे पड़ोस में बच्चों का रोना। पड़ोसन की आवाज़ "यह जंगल नहीं है···वक़्त-बेवक़्त नक्कालों की तरह चीख़ने लगते हो ! तुम लोगों ने समझ क्या रखा है ! मुश्किल सत्य···उठा दिया ! अपना होता तो समझते !"

है न पहनते)

औरत : तू मेरे कपड़ों की दुश्मन हो गई है!

लड़का : (प्रवेश) क्यों डाट रही हो इस बेचारी को।

औरत : यह छोकरी तो दिन पर दिन बिगड़ती जा रही है! परसों मेरा पेटीकोट पहनकर मटक रही थी'''मैंने कुछ नहीं कहा। कल ब्लाउज पहने बैठी थी, मैं चुप रही। और आज'''देख ले, तू ही देख ले!

लड़का : तो क्या हुआ?

औरत : इस तरह जवान-जवान लड़कियों का फ़ैशन करना अच्छी बात है? चुड़ैल!

लड़का : गाली क्यों दे रही हो! कितनी अच्छी लग रही है इस साड़ी में। (साड़ी का नाम सुनकर लड़की घबराकर साड़ी खोलती है। लड़का उसे रोक देता है।) नहीं, नहीं खोल नहीं।

औरत : (थाली लड़की को थमाकर, खिड़की के पास जाती है।) मैं देख रही हूं तू इसको बिगाड़कर रहेगा!

लड़का : इसका भी तो मन है। शौक पूरा कर लेने दो बेचारी का।

औरत : शौक पूरा करना है तो कहती क्यों नहीं अपने बाप से! दस साल से हर पहली को तीस रुपये गिन के ले जाता है।

लड़का : कितना चाहती हो इसे, लेकिन'''

औरत : तू चुप रह! आया बड़ा'''

लड़का : क्या कीमत है इस साड़ी की! मुझसे ले लो।

औरत : रहने दे! रहने दे! अब तू देगा और मैं लूंगी।

लड़का : क्यों नहीं।

औरत : तू समझता है, इसकी पहनी हुई साड़ी को अब मैं पहनूंगी। न मालूम छोकरी ने कब से नहीं नहाया है। लेकिन इतना

दूसरा अं

□

स्थान : वही

समय : उसी दिन दोपहर

(कप्तान के पास बैठा लड़का अखबार पढ़ रहा है)

लड़का : अमरीका के राष्ट्रपति का हत्यारा मानसिक रोगी···

कप्तान : छोड़ो।

लड़का : नक्सलवादियों द्वारा दस व्यक्तियों की हत्या···

कप्तान : छोड़ो, आगे।

लड़का : चार वायुयानों का अपहरण···

कप्तान : सुनो इंशुअरेन्स एजेन्ट का क्या हुआ ?

लड़का : आ जायगा।

कप्तान : कब ?

लड़का : आज शाम को।

कप्तान : पक्की बात ?

लड़का : बंगला देश में तूफान··· एक लाख के मरने की आशंका।

कप्तान : नहीं आगे।

लड़का : सरकारी कर्मचारी हड़ताल पर···

कप्तान : नहीं, छोड़ो, आगे।

लड़का : वियतनाम में सुधरती स्थिति···

कप्तान : नहीं, छोड़ो आगे।

लड़का : हरीजन लड़के को पानी छूने पर मारपीट कर जिन्दा जला दिया।

कप्तान : कोई बात नहीं, आगे चलो।

लड़का : बिहार-राजस्थान में भूख से पचास आदमी मरे···

कप्तान : सुनो गेहूं मिल रहा है ना?

लड़का : क्यों?

कप्तान : साल भर के लिए डाल लेना चाहिये (लड़का जाता है) अरे कहां को!

लड़का : काम है!

कप्तान : यह अखबार?

लड़का : देर हो गई है!

कप्तान : (घड़ी देखता है) खाक देर हो गई है! ···अच्छा हटा, बाजी···

लड़का : नहीं, शाम को! (प्रस्थान)

कप्तान : इंशुअरेन्स एजेन्ट को साथ लाना! (शतरंज खेलता है। औरत का दवा लिये प्रवेश)

औरत : यह लो···(मौन) मुझे और भी काम है···(कप्तान बेचारगी से औरत को देखता है) दवा पीकर आराम से बैठो।

कप्तान : तुमने तो कहा था रसगुल्ले-गुलाबजामुन दोगी?

औरत : पहले दवा पीओ।

कप्तान : नहीं, पहले रसगुल्ले-गुलाबजामुन दो।

औरत : अगर खाना-वाना करोगे तो मैं डाक्टर को बुला लाऊंगी···

कप्तान : नहीं, उस लेडीफून को मत बुलाना।

औरत : तो चलो, दवा पीओ।

कप्तान : (घड़ी दिखाकर) अभी पांच मिनट बाकी हैं। सुनो कल सुबह का क्या सोचा है ?

औरत . मुझे खा लिया है तुम्हारे खाने ने ! (कप्तान के मुंह में थर्मामीटर डालकर, उसे कुर्सी पर बैठा देती है। खिड़की के पास जाकर) क्यों री, अभी नहीं बुहार सकी उसका कमरा ! (झाड़ू लेकर लड़की खिड़की पर आकर 'हां' का संकेत करती है।)

औरत : किताब-कागजों को अच्छी तरह सम्हालकर रख नहीं तो घर को सर पर उठाएगा। (कमरे में झांकती है) कितनी सिगरेट पीता है ! सिगरेट के टुकड़ों को वहां से उठाकर फेंक दे ! पतलून उठाकर टांक दे ! कुर्ता-पजामा धोकर गुम्बान डाल देना ! इस लड़के को इतनी भी परवाह नहीं है अपनी ! आज भी बिना खाए चला गया ! (कप्तान मौका पाकर दवा को उठाकर फेंकने के लिए इधर-उधर देखता है) क्यों जी दे क्या कर रहे हो ? (कप्तान 'पी रहा हूं' का संकेत करता है। कप्तान से दवा की शीशी लेकर हिलाती है) इतने भोले नहीं हो, जो अपने आप दवा पी लोगे (गिलास में दवा उड़ेलती है) लो। (कप्तान 'ठहरो' का संकेत करता है।) लो अब हो गया (थर्मामीटर के लिए हाथ बढ़ाती है, कप्तान उसे रोकना चाहता है) अभी क्या ठहरो-ठहरो लगा रखी है ! मुझे दमों काम पड़े हैं ! तुम्हारे कपड़े-बिस्तर धोने हैं ! (थर्मामीटर निकालकर देखती है) बढ़ गया है ! तभी कहती हूं वक्त पर दवा लो, वक्त पर खाओ⋯पर तुम हो ' खाने-भाटी खा

उठकर अलमारी-डिब्बों को टटोल-टटोल कर पेट पूजा करते रहते हो। लड़के के लिए मैंने खड़ी मलाकर रखी थी, कहाँ गई ? (कप्तान मुंह फेर लेता है।) अब मुंह क्यों सी लिया ?

कप्तान मुझे क्या मालूम···बिल्ली खा गई होगी।

औरत पूछूं अभी लड़की को बुलाकर ?

कप्तान (घबराकर) क्या ?

औरत · बिल्ली खा गई ! उस छोकरे को कुछ खाने को दो तो नाक-भौंह सिकोड़ता है। जब देखो·· यह खाओ, वह खाओ मैं आजिज आ गया हूं तुम्हारे खाने से। और एक तुम हो चीज पर नजर पड़नी चाहिए, हजम ! (दवा बढ़ाकर) लो पिओ ! (कप्तान मुंह बनाता है) सुन रहे हो मैं क्या कह रही हूं ?

कप्तान (घड़ी दिखाकर) अभी आधा मिनट है।

औरत यह आधा मिनट, एक सेकिण्ड का विचार खाने-पीने में नहीं बरतते !

कप्तान · इसे यहां रख दो। तुम जाओ···मैं पी लूंगा·· फेंकूंगा नहीं···

औरत · *नहीं मैं पिलाऊंगी। (कप्तान का कान पकड़ती है)*

कप्तान . जब तुमसे कह दिया है मैं पी लूंगा, तब !

औरत · मुझे तुम्हारा रत्ती भर भी यकीन नहीं है···चलो मुंह खोलो··· (कप्तान घड़ी देखता है) चलो···

कप्तान · अभी पांच सेकिण्ड हैं।

(मुर्गे की बांग। कप्तान भागकर दड़बे के पास जाता है। प्यार से।) नहीं, नहीं···(मुर्गे की आवाज) समझ गया, समझ गया भूख लगी है···(औरत जाने के लिए आगे बढ़ती है···नाक चढ़ाकर पैर को फ़र्श पर साफ़ करती है। वह बड़बड़ाता है) !

औरत : मरा मरता भी नहीं है !

कप्तान : देखो-देखो, नाहक गाली मत दो… !

औरत : सारे दिन घर-भर में खिसकता रहता है ! गंदगी फैलाता है ! कहीं उठने-बैठने का धरम ही नहीं छोड़ा !

कप्तान : पर तुम क्यों हाय-हाय मचा रही हो ! तुम्हें तो सफाई नहीं करनी पड़ती है !

औरत : तो तुम्हें करनी पड़ती है !

कप्तान : नहीं नहीं तुम्हें करनी पड़ती है ! (मौन) दिन-रात उसकी खातिरदारी में लगी रहती हो और यहाँ बातें बनाती हो ! सुनी कहीं का !

औरत : एक दिन आपके कारण घर छोड़ जाएगा वह। उसी दिन मैं भी काला मुँह करूँगी यहाँ से।

कप्तान : तो तुम भी इसके लिए अनाप-शनाप मत बका करो। वक्त पर खाने-पीने को दिया करो। (लड़की का झाड़ू लिए प्रवेश) क्यों री तू किस मर्ज की दवा है ? (लड़की ठिठक कर खड़ी हो जाती है) अगर वह कहीं भूल से गंदा कर दे तो क्या तेरा फर्ज नहीं कि उसे साफ करे ! (लड़की चुप)

औरत : सड़क के उतरते ही उसके कमरे को झाड़-बुहारकर ठीक कर दिया कर ! एक मेरा ही ठेका नहीं है ! (लड़की चुप)

कप्तान : सुन ! अब वह पहली बार दे तो तू (कुत्ते की तरफ इशारा करके) इसकी सफाई कर दिया कर ! (लड़की चुप)

औरत : वक्त-बेवक्त काम पड़ते लड़के की ओर चुगली है। ध्यान देकर हाजिर रहा कर। वह इसको पास पसन्द नहीं करता है। (लड़की चुप)

कप्तान : वक्त पर ही खाना-पानी दे दिया कर। यह भूखा रहता

पसन्द नहीं करता। (लड़की चुप)

औरत : रात देर-देर तक तुझे गीत सुनाता है। ऐसे उसकी तन्दरुस्ती बनेगी कि बिगड़ेगी ! (लड़की चुप)

कप्तान : इस तरह देर-देर से वो···क्या नाम···खाना-पीना मिलने से इसकी तन्दरुस्ती बनेगी कि बिगड़ेगी। (लड़की चुप)

औरत : अगर वक़्त पर नहीं सोता, तो सुलाया कर ! (लड़की चुप)

कप्तान : अगर यह वक़्त पर नहीं खाता, तो खिलाया कर ! (लड़की चुप)

औरत : अगर वक़्त पर नहीं उठता तो···

कप्तान : अगर यह वक़्त पर क्या···नाम···

औरत : (खीझकर) बन्द करो तिक्-तिक्-तिक् !

कप्तान : तुम भी बन्द करो अपनी चिक्-चिक्-चिक् ! (क्षणिक विराम)

औरत : (लड़की से) कितनी बार कहा है कि उसका काम वक़्त पर कर दिया कर, परदेस में रहता है। मैं तो उसे ज़रा भी तकलीफ़ नहीं होने देती, उसे मेरी बात ही अच्छी नहीं लगती। (लड़की बाहर चली जाती है।)

कप्तान : (बीच में) तभी तो कहता हूँ···

औरत : तुम होते कौन हो कुछ कहने वाले ?

कप्तान : मैं···मैं मकान मालिक हूँ।

औरत : हर महीने तुम्हें दस तारीख को सौ रुपये देता है या नहीं ?

कप्तान : इससे क्या मतलब ?

औरत : जवाब दो ?

कप्तान : कहना नहीं है ?

औरत : रोज़ शाम को तुम्हारे घर का सौदा-सामान लाता है या नहीं ?

कप्तान : यहाँ खाना नहीं खाता क्या ?

कप्तान : कहाँ चलेगा ?

औरत : एक-दो-ढाई अपने फर्जी के आगे और आपके प्यादे के सिर पर। अब न आपका घोड़ा हिल सकता और न शह पड़ती है।

कप्तान : क्यों ?

औरत : क्योंकि घोड़ा नाइट हो गया है। (क्षणिक विराम) क्यों ?

कप्तान : तो हम प्यादे पर रुख का जोर डाल देंगे।

औरत : डालिए।

कप्तान : (रुख को बढ़ाकर) लो।

औरत : तो उसने तुम्हारा प्यादा पीट लिया''यों ?

कप्तान : अरी अनाड़ी की दुम, उसे स्यामग्गा मात हो जाएगी।

औरत : कैसे ?

कप्तान : (रुख बढ़ाकर) ऐसे। (विराम) अब फर्जी भी अरदब मे आ गया। इसे कहते हैं चाल !

औरत : तो उसने रुख पीट लिया।

कप्तान : क्या-क्या'' ? नहीं वह यह चाल चलेगा ही नहीं।

औरत : इसी को चलेगा।

कप्तान : ब्लेडीफूल !'''इस लड़के का हिसाब-किताब समझ मे नहीं आता। ' वह डाढ़ी-मूछ क्यों नहीं मुड़वाता ?

औरत : क्यों, इस वक्त तो मैं खेल रही थी ?

कप्तान : चालें तो उसी की चल रही थी। (डाढ़ी खुजलाकर) यों-यों करता रहता है ''ध्यान टप-टप जाता है'''भूल जाता हूं। नहीं ''तुम उससे कहती क्यों नहीं'''तुम उससे कहो कि कुछ काम करे।

औरत : जो उसका काम है, करता है।

कप्तान : क्या करता है ? किस ऑफिस मे है ? कितनी तनख्वा मिलती

समझ क्या रखा है……कहीं और चला जाऊंगा……वहीं जम जाऊंगा……मुझे मौका ही नहीं मिला……तकदीर खराब थी……बीमार पड़ गया…… जरा से देर की बात थी……पर नहीं……अरे, नहीं तो आज मैं पहला आदमी होता……मेरे नाम के डाक-टिकट छपते……देश-विदेश से बुलावा आता……(मौन। टहलता है। विट्टू लगाता है। टहलता है। चलने में असमर्थ……लड़खड़ाता है…… बैठता है……हांफता है। औरत फांसी का फंदा गले में डालती है) इस पेड़ को कटवा दो…अच्छा नहीं लगता।

औरत : मेरी लाश के साथ कटवाना !

(सब्जी वाले की आवाज)

कप्तान : मैं सब्जी नहीं खाऊंगा ! (आवाज) सुन रही हो मैं सब्जी नहीं खाऊंगा ! (लड़की का प्रवेश…हाथ में सब्जी की कण्डी है।)

औरत : सब्जी ही बनेगी ! (बाहर को जाती है।)

कप्तान : मैं चूजों का शोरबा लूंगा।

औरत : सब्जी ही बनेगी !

कप्तान : (होंठ बिचका कर) न ' ईं ऊ…! (औरत व लड़की का बाहर को प्रस्थान। मुर्गों की आवाज। कप्तान के टेढ़े होंठ मुस्कराहट में बदल जाते हैं। दड़बे की तरफ देखता है। जाता है। उसे खोलकर अण्डा निकलता है) डबल है ! (दड़बे को बन्द करता है। दबे पांव आकर अपनी कुर्सी पर बैठ जाता है। अण्डे को छुपा लेता है। शतरंज खेलता है। औरत व लड़की का सब्जी लेकर प्रवेश। लड़की गाजर खा रही है)

कप्तान : मेरे लिए क्या लाई हो ?

दक्षिण-पश्चिम से (जेब से सार्टिफिकेट निकालता है) पढ़े
इसे ''(आगंतुक पढ़ता है) कर्नल का दिया हुआ है, अंग्रेज
था वह कोई हिन्दुस्तानी अफसर नहीं था···क्यों···मानते हो
हूं कुछ !

आगंतुक : कमाल की तारीफ है।

कप्तान : अब भी वही बात है जनाब। वही कमाल कर सकता हूं··
बस जरा तबियत ठीक हो जाय। सुनो तुम कहीं से मेरे लि
ऑक्सीजन का आला नहीं ला सकते ?

आगंतुक : आक्सीजन का आला ?

कप्तान : हां आला। ऊंचाई में आक्सीजन की जरूरत पड़ती है।

आगंतुक : आ···ला···। अच्छा वो वो !

कप्तान : हां वो !

आगंतुक : ला सकता हूं।

कप्तान : कब ?

आगंतुक : जब कहोगे···अब तो मैं यहीं हूं।

कप्तान : यहां कहां ?

आगंतुक : आपने कमरा देने का वायदा किया है।

कप्तान : मैंने क्या किया है ?

आगंतुक : वायदा।

कप्तान : किसका ?

आगंतुक : कमरे का।

कप्तान : मुझे याद नहीं। (कप्तान मुड़ता है, आगंतुक पुड़िया खड़
खड़ाता है।)···ये क्या लाये हो ?

आगंतुक : गुलाबजामुन···ठीक है, तो कहीं और तलाश लेता हूं।(जान
चाहता है)

कप्तान : सुनो···हो जाय एक बाजी ।

आगंतुक : मुझे कमरा तलाशना है ।

कप्तान : हो जायगा ।

आगंतुक : ये बात हुई ना ।

कप्तान : ये किसके लिये आये हो ?

आगंतुक : आपके । (बैठता है)

कप्तान : गुलाबजामुन ! स्लैंडीडूस ! (गुलाबजामुन निकालकर खाता है ।) मुर्गे की बांग । चुप-चुप चुप·· मांग रहा है । मुझसे हर चीज मांगता है ।

(गुलाबजामुन तोड़कर दड़बे में डालता है ।)

आगंतुक : बड़ा हट्टा-कट्टा है ।

कप्तान . मुर्गा या पीछा नहीं छोड़ता । कभी मेरा भी यही हाल था । पर अब वो बात कहां रही···बढ़िया खाने-पीने को ही नहीं मिलता···। पता है, यह मुर्गी इतना बड़ा अण्डा देती है । क्यों ?···क्योंकि मैं मुर्गे को माल खिलाता हूं । (गुलाबजामुन खाता है । आगंतुक बेंची के पास चला जाता है । अन्दर से लड़की की गूंगी आवाज आती है । लकड़ी लिए चूहे के पीछे भागती हुई आती है । इधर-उधर मारती हुई आदमी के पैर पर मार देती है । वह चीखकर बेंची पर बैठ जाता है । लड़की एक कोने में चूहे को घेरकर मारती है)

कप्तान : (आगंतुक से) उठो······! उठो यहां से······उठ जाओ ! (गुलाबजामुन खाता है, आदमी पैर दबाये बैठा खिलखिलाता रहता है । लड़की चूहे पर जुटी रहती है । कप्तान चीखता-खाता रहता है । कुछ देर तक ऐसा ही चलता है । लड़की मरा [illegible] उठाकर बाहर को आती है । आगंतुक उठकर उसे

देखता है।)

आगंतुक : चूहा!

कप्तान : मार डाला!

आगंतुक : बड़ी होशियार है।

कप्तान : हां बड़ी।

आगंतुक : सुन्दर भी।... काफी बड़ी हो गई!...क्या उम्र होगी?

कप्तान : ...पेड़ की?

आगंतुक : नहीं, लड़की की।

कप्तान : तुम इस पेड़ को उखाड़ नहीं सकते?

आगंतुक : क्यों?

कप्तान : वो...अच्छा नहीं लगता।

आगंतुक : कैसा लगता है?

कप्तान : अजीब-सा ...घबराहट-सी होती है, इसको देखकर।...

आगंतुक : मैं किस कमरे में रहूंगा?

कप्तान : इन्शुअरेन्स एजेन्ट को नहीं लाये?

आगंतुक : आ जायगा।

कप्तान : कब?

आगंतुक : आज शाम को।

कप्तान : पक्की...।

आगंतुक : चाहो तो किराया पेशगी ले सकते हो, मैं साफ आदमी हूं।

कप्तान : हां-हां मुझे मालूम है ...आओ।

आगंतुक : मैं अच्छे से अच्छे मकानों में रह चुका हूं। यहां तो कुछ दिन आपकी खातिरी करनी है। मेरी दिली तमन्ना है एक बार शतरंज के खलीफा का खिताब पा सकूं।

कप्तान : अभी तुम्हारी तो बात ही और है...मैंने तो [illegible]-

कप्तान : क्या है इसमें ?
आगंतुक : बालूशाही !
कप्तान : देखूं। (हाथ बढ़ाता है)
आगंतुक : बड़ा ?
कप्तान : पुड़िया।
आगंतुक : किसलिए ?
कप्तान : हां··· हां···अरी खड़ी क्या ताक रही है ले-ले, ले-ले !
(लड़की आगे आती है। आगंतुक धीरे-धीरे हाथ खींचता है। लड़की बिल्कुल उसके पास चली जाती है। नज़र पुड़िया पर है कप्तान की भी और लड़की की भी। आगंतुक की लड़की पर (क्षणिक विराम लेती क्यों नहीं !) आगंतुक लड़की का हाथ पकड़कर उसमें पुड़िया रखता है। क्षणभर हाथ को थामे रहता है···लड़की तेज़ी से चली जाती है।)
आगंतुक : बड़ी भोली लड़की है।
कप्तान : (शतरंज लगाते हुए) हां, बड़ी।
आगंतुक : यहां कब से है ?
कप्तान : यहीं पली है।
आगंतुक : समझा नहीं ?
कप्तान : सात साल की होगी जब इसका बाप इसे यहां छोड़ गया था। मेरी औरत और मैं भी बड़ा अकेला-अकेलापन महसूस करते थे···बस रख लिया। कुछ सयानी हुई काम-धन्धा करने लगी। एक दिन इसका बाप आया और बोला····फला जगह काम मिल रहा है बिटिया कर लेगी। पर यह गई ही नहीं··· हट ठानकर बैठ गई, चिपटकर रोने लगी ! आखिर है तो बेटी जैसी फ्लेंड़ीफूल। बस आठ-दस रुपये महीने देने शुरू कर

लिए इसके चार की। अब तो तीस रुपये में आता है। गए महीने पच्चीस था चालीस कर दो, नहीं हम लेजात रहिन बिटिया का।' मैं ताव खा गया। तुम्हें नहीं मालूम मुझे बड़ा ताव आता है। जो हो, सो मैंने भी···अरे जा लेजा, यहां ऐसा कौन सा काम है! डांट दिया···घबरा गया ब्लैंडीफून। वैसे घबरा मैं रहा था कि कहीं ले ही न जायें।

आगंतुक : अगर ऐसी बात है तो मैं इसे काम दिला सकता हूं।

कप्तान : क्या?

आगंतुक : मेरा···मे' रा एक दोस्त है। उसकी दो···एक मां है··· एक बीवी है।

कप्तान : तुम ब्लैंडीफून हो!

आगंतुक : भले लोग हैं, सुख से रहेगी!

कप्तान : हम बुरे हैं! दुख दे रहे हैं! क्या मतलब है तुम्हारा?

आगंतुक : उन्हें भरोसे की आया की जरूरत है।

कप्तान : हमें बेटी की।

आगंतुक : बेटी?

कप्तान : हां, हमारी बेटी जैसी ही है ब्लैंडीफून।···चाल में चाल घोड़े की चाल···(घोड़ा चलता है, उसका सिर टूट जाता है) अरे! यह तो टूट गया! (जोड़ने की कोशिश करता है) अब क्या होगा?

आगंतुक : नया ला दूंगा।

कप्तान : कब कल?

आगंतुक : कल किसने देखा है, आज।

कप्तान : तो आ जाओ फिर···एक-दो-तीन।

आगंतुक : आप हमेशा पहले घोड़ा ही चलते हैं? (चलता है)

कप्तान : खेल ही घोड़े का होता है···लो। (दोनों खटाखट चलते हैं)

आगंतुक : शायद इसीलिए टूट गया।

कप्तान : ऐसा ही होता है मेरे साथ···कैप्टन बना तो रिटायर हो गया, एवरेस्ट की चोटी कुछ ही दूर रह गयी कि बीमार पड़ गया, रेस के लिए घोड़ा तैयार किया उसके पैर में लम्बी कील चुभ गई सोचा बढ़िया-सा घर बसाऊंगा···शादी की औरत भरोसे की नहीं मिली।

आगंतुक : क्यों ?

कप्तान : तुम्हें भरोसा है अपनी औरत पर ?

आगंतुक : अभी कुंवारा हूं।

कप्तान : जीत मे हो···मत करना शादी।

आगंतुक : आपको उस पर भरोसा क्यों नहीं है ?

कप्तान : औरत का दीन-ईमान नहीं होता।

आगंतुक : पक्की हो चुकी है।

कप्तान : तोड़ दो। यार के साथ फरार हो जाएगी, तुम क्या कर लोगे उसका, लौटने पर अपना सकोगे उसे ?

आगंतुक : हरगिज नहीं।

कप्तान : निकाल भी नहीं सकोगे।

आगंतुक : ऐसा !

कप्तान : परेशान रहोगे···सोचोगे और पछताओगे, सारी जिन्दगी यही तिलमिलाहट यहीं बेकली चलती रहेगी।

आगंतुक : हूं···।

कप्तान : क्या ?

आगंतुक : चलिए, शह !

कप्तान : (सोचकर) लो।

आगंतुक : यह नाउठ है।

कप्तान : मुझे पता है। (चाल चलता है।) लो।

आगंतुक : पिट जाएगा।

कप्तान : ब्लैडीफूल ! ·· मेरे ही सारे घर बन्द हैं !

आगंतुक : सोचिए। (सिगरेट जलाता है)

कप्तान : देखा, कैसा होता है मेरे साथ ! मात होनी चाहिए थी तुम्हें, हो रही है मुझे। (आँख बचाकर एक मोहरा सरकाता है)

आगंतुक . बेईमानी !

कप्तान . क्या ?

आगंतुक इसे यहीं रहने दीजिए, अभी यह घर है।

कप्तान · अरे हां, मेरे ध्यान में ही नहीं आया। (मोहरा बढ़कर) कौन गधा कर रहा है बेईमानी ! ब्लैडीफूल !

आगंतुक · आपने यह मोहरा नहीं सरकाया ?

कप्तान . इसे·· वो·· वो तो मैं···चाल सोच रहा था।

आगंतुक . मुझसे ही गलती हो गई, मुआफी चाहता हूं। (चलता है) लो यह चला।

कप्तान : यही तो तुम लोग गड़बड़ करते हो ! समझ लो चाल वो पूछता जिसमें दुश्मन की सोलह चालों की काट, उसके बादशाह को हिले बिना शह और मात दे जाए ?

आगंतुक : तो आपने ये सब चालें यही सोचकर चली हैं !

कप्तान : और क्या।

आगंतुक : इतनी जल्दी कैसे सोच लेते हैं आप ?

कप्तान : खेल विरासत में मिला है मुझे, विरासत में। बाप-दादा के घुटनों पर बैठकर सीखा है।

आगंतुक : (शह बचते हुए) लो यह बचा।

कप्तान : वाह क्या बात थी मेरे बाप की ब्लेंडीफूल'''हर
एलानिया चलते थे। (घड़ी दिखाकर) दस से ग्यारहवा मिनट
नहीं लगाते थे। और मजे की बात ये कि देखते ही देखते-शह
ये मात। (आगंतुक कप्तान की सूरत देखता है) जी
जनाबली, ऐसा ही खेलते वो'''और दादाजी'''अच्छे-अच्छे
शतरंज के खलीफे बाज़ी लगने से पहले उनके चरण छूते थे।
एक यह लड़का है, ब्लेंडीफूल खेलता ही नहीं! आधी बाजी'''
आधी क्या मैं कहता हूं (घड़ी दिखाकर) पांच मिनट की भी
बात नहीं है, पर बैठता ही नहीं। मैं बुलाता हूं तो सट से
खिसक-खिसक जाता है! कहता है'''मुझे वक्त नहीं है।

आगंतुक : आप तो उसका बोरिया-बिस्तरा गोल करने को कह रहे थे।

कप्तान : कह तो रहा था पर (दबी आवाज़ में) यह ऐसा आसान नहीं है।

आगंतुक : क्यों?

कप्तान : मेरी औरत है ना, उसे अपनी जान से भी ज्यादा चाहती है। है तो हमारा बेटा जैसा ब्लेंडीफूल।

आगंतुक : तो फिर मैं कहां रहूंगा?

कप्तान : (चाल चलकर) ये मात! (आगंतुक सोचता है। क० ह संकर।) ब्लेंडीफूल देखा मात! (पुकारकर) सुनो यहां आओ (आगंतुक से) क्यों है कोई घर?

औरत : (प्रवेश) क्या है? क्यों'''(आगंतुक को देखकर चुप हो जाती है। आगंतुक हाथ जोड़ता है'''औरत जवाब नहीं देती।)

कप्तान : देखो!'''अरे इधर आओ, इधर (औरत पास आती है) मात! (घड़ी निकालता है) पांच मिनट में मात! चारों

साले पित कोहीनूर ! (घड़ी की चेन टूट जाती है) है···
अरे···अरे···यह तो टूट गई !

औरत : और इतराओ अच्छा हुआ ! ···

कप्तान : (रूआंसा होकर) मेरे दादाजी की थी, पिताजी ने दी थी मुझे···! (ज़ोर से रोने लगता है)

औरत : इधर दो। (चेन को जोड़ने की कोशिश करती है···कप्तान घूर देखता है) नहीं जुड़ती लो। (वापिस दे देती है। लेकर फिर रोने लगता है)

आगंतुक : दिखाना।

औरत : आपसे कोई अच्छा काम तो हो ही नहीं सकता ! जब देखो तोड़-फोड़, चोरी···छीना झपटी ! (कप्तान घोर से देखता रहता है। आगंतुक चेन को जोड़ता है। जोड़कर घड़ी कप्तान को दिखाता है। कप्तान घड़ी को लेकर चेन को अच्छी तरह देखता-परखता है)

कप्तान : (सिसकियां भरकर) अब तो ठीक हो गई।

आगंतुक : हां।

कप्तान : देखा पहने की हर चीज़ कितनी नायाब और पुख्ता होती है। क्या बात है पुरानी चीज़ों की ! क्यों ?

आगंतुक : ऐसा ही लगती है।

कप्तान : लगती है क्या मतलब, ऐसी है।

आगंतुक : (कप्तान की अंगूठी पर नज़र पड़ती है) ···यह अंगूठी · यह भी नायाब लगती है।

कप्तान : (अंगूठी को देखकर) यह ?

आगंतुक : हां, पुख्ता बनी है। (कप्तान औरत को देखकर मुस्कराता है।) यह भी आपके दादा की ही होगी ?

कप्तान : नहीं। (औरत को देखकर) इनके बाबा की है। (दिखाता है) कैसी है।

आगंतुक : मेरे पिताजी के पास भी बिल्कुल ऐसी अंगूठी थी।

औरत : तुम्हारे पिताजी के पास ?

आगंतुक : हां।

औरत : तब तो तुम्हारे पिताजी मेरे बाबा के पक्के साथी होंगे।

कप्तान : कैसे ?

औरत : ऐसी ही अंगूठी उनके साथी ने भी बनवाई थी।

कप्तान : तुम्हारे पिता तो मुरादाबाद में रहते थे।

आगंतुक : मेरे पिताजी भी।

औरत : कैसे हैं ?

आगंतुक : गये, चले गये।

औरत : चले गये ?

आगंतुक : (रुआंसा होकर) पूजा-पाठ में रुचि थी···

औरत : मेरे बाबा की भी।

आगंतुक : (उसी भाव में) जोगी-संन्यासियों के साथ उठना-बैठना···

औरत : मेरे बाबा का भी।

आगंतुक : एक दिन चल दिये गंगोत्री-जमनोत्री की यात्रा पर, तब से लौटकर नहीं आये।

औरत : शिव-शिव ! तुम्हें उन्हें ढूंढ़ना चाहिए था !

आगंतुक : हर कोशिश की। गंगोत्री, जमनोत्री, केदारनाथ, बद्रीनाथ, हरिद्वार, प्रयाग-काशी, पुरी, रामेश्वरम कहां नहीं गया मैं उन्हें ढूंढ़ने।

औरत : इतने तीर्थ स्थानों में गए तुम ! (हाथ जोड़ती है)

आगंतुक : मैं तो कैलाश भी गया था।

औरत : कैलाश !

आगंतुक : हां, पर सब अकारथ।

औरत : चलो, इस बहाने इतने तीर्थों का पुण्य लाभ तो हुआ। तीर्थ बिना उसके हुक्म के कौन जा सकता ?

आगंतुक : यह सब आपका आशीर्वाद है दीदी।

औरत : हमने तीन बार बद्रीनारायण जाने की तैयारी की, नहीं जा पाये।

आगंतुक : क्यों ?

औरत : एक बार इनकी छुट्टी ही रद्द हो गई। दूसरी बार हमारी चोरी हो गई। तीसरी बार तो सब विघ्न-बाधाओं के होते हुए भी हम चले गये थे। ऋषिकेश पहुंचे तो खबर मिली कि सीमा में गड़बड़ हो गई।

आगंतुक : फिर ?

औरत : (उदास होकर) ऋषिकेश, हरिद्वार के दर्शन करके लौट आये।

आगंतुक : च्-च्-च् !

कप्तान : अजी यह सब हमारी ग़लती है ! ब्लंडीफूल ! जंग का पहला उसूल है कि दुश्मन को सिर मत उठाने दो। पहले हमला करो उनकी धरती पर डट जाओ, फिर करते रहो ख़तो-किताबत ! ज़मीन तुम्हारी है।

आगंतुक : सही है।

कप्तान : सही क्या ! यह मेरा तजुर्बा है। लाम शुरू हुई ''जवानों को पाव-पाव भर की राइफलें थमा दीं ! क्या ख़ाक लड़ेंगे ! हमारे ज़माने में दस-दस सेर की राइफलें थे बड़ी बड़ी '''

औरत : चुप कीजिये ''मुझे ज़रा बात तो कर लेने दो ''! कैलाश

पहुंचने में कितने दिन लगे तुम्हें ?

[आगं]तुक : यही ` यही`` कोई`` लगे होंगे`` समझलो, ज्यादा नहीं```
तीन-चार।

[औ]रत . तीन-चार ?

[आगं]तुक . हां।

[औ]रत : इतने तो केदारनाथ में लग जाते हैं। सुना है वहां पहुंचने में
एक महीना लग जाता है।

[आगं]तुक : कहां ?

[औ]रत : कैलाश।

[आगं]तुक : कैलाश में`` ऐसा कहो ना फिर, मुझे तो वहां पहुंचने में कोई
पूरा डेढ```बल्कि पूरे दो ही समझो```हां पूरे दो महीने लगे
होंगे।

[औ]रत : दो महीने लगे ?

[आ]गंतुक : यो```मैं पूरे कैलाश तक गया था।

[औ]रत : शिवजी के द्वार तक ?

[आ]गंतुक : हां, बिल्कुल द्वार तक, फिर वहां से घूमता-घामता हरिद्वार
से बद्रीनारायण पहुंचा।

[औ]रत : बड़ी गलती की ! तुम्हें तो बद्रीनारायण से होकर हरिद्वार
आना चाहिए था।

[आ]गंतुक : जी हां, जी हां```मेरा कहने का मतलब बद्रीनारायण से```

औरत : जाने दो फिर भी भाग्यवान हो।

आगंतुक : सब आपका आशीर्वाद है, वरना मेरे इतने भाग कहां, दीदी।

औरत : (आह भर कर) मुझे बद्रीनारायण के ही दर्शन हो जाते तो
मेरा जीवन सुकारथ हो जाता !

आगंतुक : होंगे, जरूर होंगे। मैं आपको अपने साथ लेकर जाऊंगा।

औरत : तुम भी आओगे ?

आगंतुक : हां। (कप्तान से) मैं किस कमरे में रहूंगा ?

कप्तान : तुम ! (औरत से) यह किस कमरे में रहेगा ?

औरत : कमरे में ?

आगंतुक : हां !

औरत : हमारे पास खाली कमरा कहां है ?

कप्तान : वाह, है कैसे नहीं, लड़के की छुट्टी करो।

औरत : क्यों करो ?

कप्तान : वह दाढ़ी-मूंछ क्यों नहीं मुड़वाता ?

औरत : नहीं मुड़वाता !

कप्तान : बाजी पूरी क्यों नहीं करता ?

औरत : घंटे भर में एक चाल, ऊपर से बेईमानी, कौन खेल सकता तुम्हारे साथ।

कप्तान : वो इंशुअरेन्स एजेन्ट को क्यों नहीं लाता ?

औरत : तुम्हारा इंशुअरेन्स नहीं हो सकता।'''

कप्तान : क्या ?

औरत : हां !

(क्षणिक विराम)

कप्तान : अच्छा आदमी नहीं है।

औरत : तुम्हारा क्या बुरा किया है ?

कप्तान : वह'''वह लड़की के साथ इश्क लड़ाता है।

औरत : (आगंतुक से) अब बताओ, कोई क्या बात करे इनसे, जो मुंह में आता है बक देते हैं।

कप्तान : मैं ठीक कह रहा हूं।'''

औरत : वह जवान है।

कप्तान : तो क्या हुआ ?

औरत : तुमने तो बुढ़ापे में किया विवाह।

कप्तान : विवाह-निभाना उसके हाथ होता है।

औरत : इश्क भी उसके हाथ होता है।

कप्तान : तो खुल्लम-खुल्ला क्यों करता है, बेशर्म !

औरत : तो तुम्हीं शर्म कर लिया करो, लुक-छुप कर न देखा करो।

कप्तान : एक मैं ही देखता हूं···तुम तो···

(चुप रहने का इशारा करती है।)

खूनी कहीं का !

औरत : चुप रहो !

आगंतुक : (बीच में ही) आप लोग मेरे कारण क्यों झगड़ रहे हैं ! मैं कहीं और चला जाऊंगा। बद्रीनारायण कहीं न कहीं तो जगह दे ही देंगे।···पर आज की रात ज़रा मुश्किल है।

औरत : आज की रात ?

आगंतुक : बस आज की रात। वैसे इससे पहले जाने की मेरी कोशिश रहेगी।

औरत : ऐसी क्या बात है···आज रात तो तुम यहां भी रह सकते हो। मेहमान की तरह।

आगंतुक : मेहरबानी ! (अटेची उठाकर) इसे कहां रख दूं ?

औरत : आओ।

आगंतुक : (औरत के साथ जाते हुए) बहुत-बहुत धन्यवाद दीदी !

औरत : इस साल बद्रीनारायण के पट कब खुलने वाले हैं ?

आगंतुक : इस साल···बस···जल्दी ही खुलने वाले हैं।

(दोनों का प्रस्थान)

(कप्तान शतरंज खेलने लगता है। लड़के का फ्ल,

गुलाबजामुन, रसगुल्ले लिए प्रवेश ! कप्तान को देखकर दूर खड़ा मुस्कराता है) शह, ये मात।

कप्तान : शह, ये मात'''मगर वो है'''

लड़का : बैठता ही नहीं ब्लैंडीफूल !

कप्तान : देख अगर आज तूने बाजी पूरी ना की''''''

लड़का : (बीच में) तो बोरिया बिस्तरा गोल। उससे 'हां' है।

कप्तान : आज मैं बिल्कुल लिहाज़ नहीं करूंगा !

लड़का : मैं आपको लिहाज़ करने का मौका ही नहीं दूंगा !

कप्तान : क्या मतलब ?

लड़का : मैं किसी भी वक्त यह कमरा छोड़कर जा सकता हूं !

कप्तान : क्यों ?

लड़का : यहां से चला जाऊंगा।

कप्तान : तेरा मतलब है, तू'' चला जायगा'''हमें छोड़कर !

लड़का : हां। (मुस्कराता है)

कप्तान : अब थप्पड़ दूंगा एक। बेमतलब रोब जमाता है ब्लैंडीफ़

लड़का : सच।

कप्तान : कहां जायगा तू !

लड़का : कहीं भी चला जाऊंगा !

कप्तान : कौन है तेरा ? कौन है जो तेरी बात समझता है ?

लड़का : अब सब समझते हैं।

कप्तान : तू बक रहा है।

लड़का : (दृढ़ता से) अब मैं, वो लिखता हूं जो लोग चाहते हैं। किस्म के लोग।

का : मुझे पुरस्कार मिला है।

ान : तो'' सच''' (मौन। उसके पास जाते हुए) क्या तू सचमुच नाराज हो गया है रे? मैं'''मैं'''तो, मैं तो ऐसे ही' नहीं कहीं नहीं जायगा तू। यहीं रहेगा। यहीं हमारे साथ।

का : मैं जाऊंगा।

ान : ठीक, मैं समझ गया (अपने स्थान को जाते हुए) अब मैं तुमसे कुछ नहीं कहूंगा, मत खेलना। मैं कहूंगा ही नहीं'''अखबार भी मत सुनना, मैं सुनूंगा ही नहीं, इनुअरेन्स भी नहीं करवाऊंगा'''(मोहरें समेटता है) अपने आप पूरी कर लूंगा। खेल खत्म हो जायगा'''

ड़का : (कप्तान के पास आकर, उसे रोकते हुए) अरे रे, यह क्या!'''मैं तो ऐसे ही कह रहा था। आज तो बाजी पूरी होगी।

तान : क्या मतलब?

ड़का : (एक-एक करके चीजें कप्तान को देता है) ये लो रसगुल्ले, गुलाबजामुन।

प्तान : क्या!

ड़का : ये चीकू, ये सतरे, ये सेब, और ये'''(देते देते रोक लेता है)

प्तान : ये क्या है?

ड़का : चौकलेट।

प्तान : (लपकते हुए) ला!

ड़का : (हाथ पीछे कर लेता है) ऊं हूं! (कप्तान बच्चे का-सा मुंह है।) अच्छा लो। (देता है)

॥ भाग्य बड़ा अच्छा हो रहा है! कितनी-कितनी

.. ! स्वीटीफूल। (चौकलेट खाता है)

लड़का : आपने मुझे बधाई नहीं दी।

कप्तान : बाद में (आता है, चीज़ों को देखकर) ये सब···ये सब···इन्हें कहीं छुपा दूं नहीं तो वह छीन लेगी। (उबासी लेता है) हे राम···! (पेड़ के खोह में छुपाता है। लड़का गुनगुनाता है, ज़ोर-ज़ोर से गाता है।) नहीं, वो वाला, वो क्या नाम··· इलेक्ट्रीसून (गुनगुनाता है) हां, छोटा-सा दलमा मेरा आंगना में···यह वाला सुना।

लड़का : (हंसकर) बड़ी यादें वाबस्ता लगती हैं इस गाने से!

कप्तान : तब मैं बीस-बाईस साल का था···थी तो उम्र में मुझसे बड़ी···पर लगती छोटी थी···

लड़का : अच्छा।

कप्तान : कद की थी नाटी पर लगती नहीं थी···इतनी-इतनी ऊंची ऐड़ी के जूते पहनती थी वो। मेरे रूठने पर अक्सर, यही गाना सुनाया करती थी। एक दिन ऐसे ही बोली'' मुझे गर्भ ठहर गया। तकरार हो गई और मैं समझाने लगा, बस तकरार-तकरार में डूब मरी ज़ालिम! बतौर याद के नदी किनारे एक जूता छोड़ गई।

लड़का : कहां है?

कप्तान : क्या?

लड़का : जूता!

कप्तान : मेरे पास···। तुम्हारा जैसा नहीं, सच्चा इश्क था।

लड़का : कहा है?

कप्तान : क्या?

लड़का : जूता।

कप्तान : तुझे क्या मतलब? (उबासी लेता है)

लड़का : सुनो गाना सुनाता हूं।

कप्तान : ज़रा ठहरजाओ ! पहले मैं इन्हें कहीं लुका दूं। (उठता है। मुर्गे पर नज़र पड़ती है, उसे रसगुल्ला देता है। ले ले तू भी खा। कैसा जवान है ! (जाते हुए) जाना नहीं, मैं अभी आता हूं। (दूसरे कमरे में प्रस्थान। लड़का मुस्कराता है। 'छोटा-सा बलमा मेरा आंगना में गिल्ली खेले', गुनगुनाता हुआ कद्दू से अपनी कविता बांचने लगता है। कमरे में चला जाता है। विराम। आगंतुक का प्रवेश। इधर-उधर देखता है। वेदी के पास जाता है। फिर कमरे के द्वार पर आकर देखता है। सिगरेट जलाकर लम्बे-लम्बे कश खींचता है। वेदी को देखता है। दबे पांव उसके पास आता है। वेदी की पटाल को उठाना चाहता है। तभी लड़की का प्रवेश। उसकी नज़र आगंतुक पर पड़ती है। वह गूंगी ज़बान मे बोलती है कि 'कप्तान साहब डांटेंगे'। आगंतुक हड़बड़ा कर वेदी से अलग हटकर खड़ा हो जाता है। लड़का खिड़की से देखता है।)

आगंतुक : (जल्दी-जल्दी सिगरेट पीने लगता है। विराम। लड़की के पास आकर) क्या है इसके अन्दर? (लड़की जाने के लिए अग्रसर होती है) सुन''' (लड़की मुड़ती है) इधर आ'' (उसके पास आती है) क्या नाम है तेरा? (जेब से दो रुपये निकाल-कर उसे देता है) ले''' (लड़की ललचाए नेत्रों से देखती है) ले ले'''कुछ खा लेना'' मिठाई-चाट (लड़की का हाथ पकड़ता है। रुपये रखता है। उसे निहारता है। विराम।) तू बहुत खूबसूरत है (लड़की का प्रस्थान। आगंतुक उसी ओर देखकर) यकीनन बहुत खूबसूरत !

लड़का : (खिड़की से) और तुम बहुत बदसूरत ! (घबराहट में

लड़का : आपने मुझे बधाई नहीं दी।

कप्तान : बाद में (खाता है, चीज़ों को देखकर) ये सब···ये सब···इन्हें कहीं छुपा दूं नहीं तो वह छीन लेगी। (उबासी लेता है) हे राम···! (पेड़ के खोह में छुपाता है। लड़का गुनगुनाता है, ज़ोर-ज़ोर से गाता है।) *नहीं, वो वाला, वो क्या नाम*··· डंडीफूल (गुनगुनाता है) हां, छोटा-सा बलमा मेरा आंगना में···यह वाला सुना।

लड़का : (हंसकर) बड़ी यादें वाबस्ता लगती हैं इस गाने से!

कप्तान : तब मैं बीस-बाईस साल का था···थी तो उम्र में मुझसे बड़ी···पर लगती छोटी थी···

लड़का : अच्छा।

कप्तान : कद की थी नाटी पर लगती नहीं थी···इतनी-इतनी ऊंची ऐड़ी के जूते पहनती थी वो। मेरे रूठने पर अक्सर, यही गाना सुनाया करती थी। एक दिन ऐसे ही बोली'' मुझे गर्भ ठहर गया। तकरार हो गई और मैं समझाने लगा, बस तकरार-तकरार में डूब मरी ज़ालिम! बतौर याद के नदी किनारे एक जूता छोड़ गई।

लड़का : कहां है?

कप्तान : क्या?

लड़का : जूता!

कप्तान : मेरे पास···। तुम्हारा जैसा नहीं, सच्चा इश्क था।

लड़का : कहां है?

कप्तान : क्या?

लड़का : जूता।

कप्तान : मुझे क्या मतलब? (उबासी लेता है)

लड़का : सुनो गाना सुनाता हूं।

कप्तान : ज़रा ठहरजाओ ! पहले मैं इन्हें कहीं छुपा दूं।(उठता है। मुर्गे पर नज़र पड़ती है, उसे रसगुल्ला देता है। ले ले तू भी खा। कैसा जवान है ! *(जाते हुए) जाना नहीं, मैं अभी आता हूं।* (दूसरे कमरे मे प्रस्थान। लड़का मुस्कराता है। 'छोटा-सा बलमा मेरा आंगना में गिल्ली खेलें' गुनगुनाता हुआ कटुता से अपनी कविता बांचने लगता है। कमरे में चला जाता है। विराम। आगंतुक का प्रवेश। इधर-उधर देखता है। वेदी के पास जाता है। फिर कमरे के द्वार पर आकर देखता है। सिगरेट जलाकर लम्बे-लम्बे कश खींचता है। वेदी को देखता है। दबे पांव उसके पास आता है। वेदी की पटाल को उठाना चाहता है। तभी लड़की का प्रवेश। उसकी नज़र आगंतुक पर पड़ती है। वह गूंगी ज़बान में बोलती है कि 'कप्तान साहब डांटेंगे'। आगंतुक हड़बड़ा कर वेदी से अलग हटकर खड़ा हो जाता है। लड़का लिड़की से देखता है।)

आगंतुक : (जल्दी-जल्दी सिगरेट पीने लगता है। विराम। लड़की के पास आकर) क्या है इसके अन्दर ? (लड़की जाने के लिए अग्रसर होती है)सुन···(लड़की मुड़ती है)इधर आ···(उसके पास जाती है) क्या नाम है तेरा ? (जेब से दो रुपये निकाल-कर उसे देता है) ले···(लड़की ललचाए नेत्रों से देखती है) ले ले···कुछ खा लेना··· मिठाई-चाट (लड़की का हाथ पकड़ता है। रुपये रखता है। उसे निहारता है। विराम।) तू बहुत खूबसूरत है (लड़की का प्रस्थान। आगंतुक उसी ओर देखकर) यकीनन बहुत खूबसूरत !

लड़का : (खिड़की से) और तुम बहुत बदसूरत ! (घबराहट में

लड़का : आपने मुझे बधाई नहीं दी।

कप्तान : याद में (खाता है, चीजों को देखकर) ये सब···ये सब···इन्हें कहीं छुपा दूं नहीं तो वह छीन लेगी। (उबासी लेता है) हे राम···! (पेड़ के खोह में छुपाता है। लड़का गुनगुनाता है, ज़ोर-ज़ोर से गाता है।) नहीं, वो वाला, वो क्या नाम··· दर्लेडीफूल (गुनगुनाता है) हां, छोटा-सा बलमा मेरा आंगना में···यह वाला सुना।

लड़का : (हंसकर) बड़ी यादें बावस्ता लगती हैं इस गाने से !

कप्तान : तब मैं बीस-बाईस साल का था···थी तो उम्र में मुझसे बड़ी···पर लगती छोटी थी···

लड़का : अच्छा।

कप्तान : कद की थी नाटी पर लगती नहीं थी···इतनी-इतनी ऊंची ऐड़ी के जूते पहनती थी वो। मेरे कहने पर अक्सर, यही गाना सुनाया करती थी। एक दिन ऐसे ही बोली'' मुझे गर्भ ठहर गया। तकरार हो गई और मैं समझाने लगा, बस तकरार-तकरार में डूब मरी ज़ालिम ! बतौर याद के नदी किनारे एक जूता छोड़ गई।

लड़का : कहां है ?

कप्तान : क्या ?

लड़का : जूता !

कप्तान : मेरे पास···। तुम्हारा जैसा नहीं, सच्चा इश्क था।

लड़का : कहां है ?

कप्तान : क्या ?

लड़का : जूता।

कप्तान : तुम्हें क्या मतलब ? (उबासी लेता है)

लड़का : सुनो गाना सुनाता हूं।

कप्तान : ज़रा ठहरजाओ ! पहले मैं इन्हें कहीं लुका दूं। (उठता है। मुर्गे पर नज़र पड़ती है, उसे रसगुल्ला देता है। ले ले तू भी खा। कैसा जवान है ! (जाते हुए) जाना नहीं, मैं अभी आता हूं। (दूसरे कमरे में प्रस्थान। लड़का मुस्कराता है। 'छोटा-सा बलमा मेरा आंगना मे गिल्ली खेलें', गुनगुनाता हुआ कटुता से अपनी कविता बांचने लगता है। कमरे में चला जाता है। विराम। आगंतुक का प्रवेश। इधर-उधर देखता है। वेदी के पास जाता है। फिर कमरे के द्वार पर आकर देखता है। सिगरेट जलाकर लम्बे-लम्बे कश खींचता है। वेदी को देखता है। दबे पांव उसके पास आता है। वेदी की पटाल को उठाना चाहता है। तभी लड़की का प्रवेश। उसकी नज़र आगंतुक पर पड़ती है। वह गूंगी ज़बान में बोलती है कि 'कप्तान साहब डांटेंगे'। आगंतुक हड़बड़ा कर वेदी से अलग हटकर खड़ा हो जाता है। लड़का खिड़की से देखता है।)

आगंतुक : (जल्दी-जल्दी सिगरेट पीने लगता है। विराम। लड़की के पास आकर) क्या है इसके अन्दर ? (लड़की जाने के लिए अग्रसर होती है) सुन... (लड़की मुड़ती है) इधर आ... (उसे ... क्या नाम है तेरा ? (जेब से दो रुपये निकाल- ... ले... (लड़की ललचाए नेत्रों से देखती है)

आगंतुक के हाथ से सिगरेट गिर जाती है। लड़के को देखता है। लड़का बाहर आता है।) कौन हो तुम ?

आगंतुक : (अपने को सम्हाल कर) तुम्हें इससे मतलब ? (पैर से सिगरेट को कुचलता है।)

लड़का : जवाब दो !

आगंतुक : तुम्हें मतलब !

लड़का : यहां क्यों आये हो ?

आगंतुक : मेहमान हूं।

लड़का : बकते हो !

आगंतुक : रहने आया हूं।

लड़का : तुम यहां रहोगे ?

आगंतुक : हां।

लड़का : निकल जाओ यहां से !

आगंतुक : तुम, कमाल है'''जान न पहचान'''

लड़का : मैं तुम्हें जरूरत से ज्यादा जान-पहचान गया हूं ! चलते बनो यहां से !

आगंतुक : देखिये जनाब, तुम'''तुम तो मेरे बारे में कुछ नहीं जानते हो, पर मैं तुम्हारे बारे में''''''

लड़का : कुछ नहीं जानते !

आगंतुक : सब कुछ जानता हूं। इसलिए तुम्हें मेरे साथ जरा तमीज से पेश आना चाहिए।

लड़का : तुम करते क्या हो ?

आगंतुक : मतलब ?

लड़का : पेशा क्या है ?

आगंतुक : तुम्हें मतलब ?

लड़का : मतलब है ! बोलो ?

आगंतुक : म···मैं करता हूं, सबसे मैं करता हूं व्यापार। (लड़के के पा जाता है।) यो यात्रा का व्यापार। याने तीर्थयात्रा व्यापार। (रामपुरी चाकू निकाल कर नाखून कुरेदने लग है)

लड़का : तीर्थयात्रा का व्यापार ?

आगंतुक : (डकार लेकर) आ···ओं ऊं···! रक्षा कर बद्रीनारायण (मुर्गा बांग देता है। लड़के को देखकर मुस्कराता है। लड़के झांकता है।) बड़ा हट्टा-कट्टा है! एकदम जवान ! क खिलाते हो इसको ?

लड़का : तुम-चले जाओ यहां से ?

आगंतुक : क्या, मैं इसे देख सकता हूं ?

लड़का : नहीं ! तुम यहां क्यों आये हो ?

आगंतुक : दीदी को बद्रीनारायण की यात्रा पर ले जाने।

लड़का : बद्रीनारायण की यात्रा···(इधर-उधर देखता है। कु उठाकर आगंतुक को मारने जाता है। उसके हाथ में च देखकर भौंचक्का रह जाता है)

आगंतुक : (लड़के की ओर मुड़ता है।) जनाब बद्रीनारायण की यात्र मैं एक सज्जन साधु आदमी हूं।

लड़का : तुम···

आगंतुक : मुझसे···मत···उलझना (मुर्गे की बांग) बड़ा हट्टा-कट्टा है

(धीरे-धीरे परदा गिरता है)

दूसरा अंक □

तीसरा अंक

□

समय—संध्या।

स्थान—वही।

(दड़बा खुला है। शतरंज बिछी है। कप्तान के मुंह मे थर्मामीटर। औरत उसके सामने खड़ी गिलास मे दवा उंडेल रही है।)

औरत : बड़ा धरम-करम वाला है।

कप्तान : (थर्मामीटर निकालकर) है नहीं, तुम्हें लगता है। (थर्मामीटर मुंह मे डालता है, बात-चीत के दौरान ऐसा ही करता है।)

औरत : मुझे बद्रीनारायण की यात्रा कराने वाला है।

कप्तान : तो यहां मेरा क्या होगा?

औरत : लड़की है।

कप्तान : उसके बस का नही।

औरत : क्यों!

कप्तान : अरे वह क्या-क्या करेगी? घर की देखभाल, मेरी तीमार-दारी। नहीं, मुझे जरा ठीक हो लेने दो फिर चली जाना।

औरत : तीर्थ उसके हाथ होता है।

[illegible] उड़ा दगा! [illegible]फल! जा अभी चली जा!

ज़हर दे जा मुझे ! फिर कभी शक्ल मत करना इधर का !
(क्षणिक विराम) मैं सब समझता हूं—मैं बीमार हूं मुझसे…
मुझसे नफरत करती हो !

औरत : नहीं, प्यार करती हूं !

कप्तान : तो बद्रीनारायण क्यों जा रही हो ?

औरत : अपना दो लोक सुधारने।

कप्तान : तो मेरा क्या होगा ?

औरत : और मेरा क्या होगा ? (क्षणिक विराम)

कप्तान : मुझ पर भरोसा नहीं ?

औरत : है।

कप्तान : तो मुझे छोड़कर बद्रीनारायण क्यों जा रही हो ?

औरत : उसका हुक्म है।

कप्तान : क्या ? क्या है ?

औरत : उसका हुक्म।

कप्तान : मेरा क्या होगा ?

औरत : और मेरा क्या होगा ?

कप्तान : ऐसी तैसी ! जा निकल जा यहां से। जैसे मैं एक तेरे ही सहारे जी रहा हूं ! तेरे बिना कुछ कर ही नहीं सकता… (पर्वतारोही का हेवरसैक पहनता है) मैं भी जा रहा हूं ! तकदीर अच्छी होती तो आज मेरे नाम के डाक-तार टिकट छपते। भाड़ में जाय…दक्षिण-पश्चिम से चढ़ूंगा…ज़रा बांध इसे ! देख क्या रही है बांध ! (औरत हेवरसैक के फ़ीते बांधती है।) तू समझती है मैं तेरे सहारे चल रहा हूं ! दीदी छोटा मुंह बड़ी बात हो जाती है, और क्या कह रहा था वो !
(थर्मामीटर कप्तान के मुंह में लगाती है।)

पूरी। (अन्तिम विराम)

लड़का : क्या वो हमेशा यहाँ रहेगा ?

कप्तान : चार चालों में मात है।

लड़का : नहीं वो अच्छा नहीं है।

औरत : यह तू क्या कह रहा है !

लड़का : आप लोग समझते क्यों नहीं ?

कप्तान : पांच मिनट की बात है।

औरत : ऐसा धर्मी मा आदमी कहाँ मिलता है।

लड़का : वह अच्छा नहीं है।

कप्तान : एक-दो चालें।

औरत : दो-चार दिन रहकर चला जाएगा।

लड़का : उसे आज ही और अभी चलता करो।

कप्तान : शह पड़ी है।

औरत : उसे अलग कमरा दिया है।

लड़का : वह पड़ोस में रहने लायक भी नहीं है !

औरत : तू मतलब मत रख उससे, चुपके अपने कमरे में पड़ा रह !

कप्तान : सब घर बन्द।

लड़का : घर में चोर घुसा है और तुम······

औरत : (बीच में) बस-बस बहुत हो गया ! हम घर में किसी को ट
दें, तुझे मतलब !

लड़का : वह कौन है ? क्या है ? पता है ?

औरत : तेरे लिये हमने क्या जाना था ! किससे पूछा था ?

लड़का : वह तो ठीक है पर······पर आप लोग यह ठीक नहीं कर र
हे। वह······(आगंतुक के पाठ के शब्द सुनाई पड़ते हैं)

कप्तान : गोली मार उसे आ हो जाए बाजी पूरी।

लड़का : तुम्हें खबर नहीं कि उसने इस घर में पैर रखते ही क्या शुरू कर दिया है। (हनुमानचालीसा का पाठ स्पष्ट सुनाई देता है)

औरत : सुन लिया ! यों तो कहीं···कहीं असली रामायण और गीता सूख आया है···और तू उसके लिए ऐसा कह रहा है। भला यह भी कोई बात हुई !

लड़का : छटा हुआ बदमाश है !

औरत : खबरदार !

लड़का : आखिर मैं भी तो कुछ कह रहा हूं।

औरत : सुन लिया है !

लड़का : लेकिन समझा नहीं है !

औरत : जरूरत नहीं है।

लड़का : मैं···तो करो जो ठीक लगता है।···(क्षणिक विराम)

कप्तान : उसका बिस्तर इसके कमरे में नहीं लगेगा, समझी स्लैडीफूल !

औरत : कौन लगा रहा है इसके कमरे में। वह तो खुद ही एकान्त चाहता है। मैंने उसे कमरा दे दिया है।

कप्तान : दे दिया है ?

औरत : हां।

कप्तान : हम कहां सोएंगे ?

औरत : बैठक में। कहता है चारपाई नहीं, धरती पर ही सो जाऊंगा। हद दर्जे का त्यागी है। मैंने कहा···जाड़ों के दिन हैं। ठण्ड लग जाएगी। तो बोला···मुझे तो ऐसे ही गर्मी महसूस होती है। उसके पास सिर्फ दो चादरें हैं। एक ओढ़ने की, दूसरी बिछाने की। कहता है सब तीर्थयात्रायें ऐसे ही की हैं। धन्य

ड़का : (औरत से) जानती हो इनकी आदत, इनकी कुठाओं को, फिर भी···

ौरत . पहले तो ······

ड़का . (डॉक्टर) तो आप ही चुप हो जाया करो ! बढ़ावा देती हो जान-बूझ कर !

ौरत . क्योंकि उससे मेरा मन हलका होता है, मुझे लगता मेरा भी कुछ है··· कोई है ··हक है······

(आगंतुक का हनुमानचालीसा गुनगुनाते हुए प्रवेश। क्षणिक विराम। लड़के को देखकर उल्टे पांव अन्दर चला जाता है।)

ागंतुक · (अन्दर से) दीदी जी ! मैंने कहा दीदी जी ! आपका मन्दिर कहां है ? (औरत का प्रस्थान)

प्तान · (औरत की ओर देखकर) ब्लडीफूल ···। देख तू ख्याल न किया कर इसकी बातों का। औरत है। समझदारी इसके बस की बात नहीं। अगर तू जरा इशारा भर कर देता तो मैं डाट-डपटकर शांत कर देता···पै बात नहीं है···मुझसे घबराती है ब्लडीफूल। आजा। (विराम) दो-चार दिन से ज्यादा नहीं टिकेगा···मैं टिकने दूं तब ना···आ हो जाए बाजी पूरी। (लड़का बैठता है) चल। (लड़का उसे देखता है) मैं यहां चल चुका हूं। (लड़का चलता है) ठीक···तो ले मैं ये चला, पांच मिनट में···सुन (घड़ी दिखाता है) यह घड़ी रुक गई है···

लड़का : ठीक करवा लाऊंगा।

कप्तान : अपने सामने करवाना। (विराम) अपनी घड़ी और औरत को किसी के साथ भूल कर भी अकेले नहीं छोड़ना चाहिए। (लड़का कप्तान को देखता है मौन) ब्लडीफूल···सोच रहा है चल।

लड़का : (चलता है) वो अच्छा आदमी नहीं है।

कप्तान : शह !

लड़का : यह आपको शह पड़ी है।

कप्तान : कैसे ?

लड़का : यह प्यादा नाइट है।

कप्तान : नाइट !···कैसे ?

लड़का : इसके उठते ही काले घर के फिले की शह पड़ी है।

कप्तान : मुझे पता है···(देखता है। सोचता है) सुन···तू इसे कहाँ से चला था ?

लड़का : यहाँ से।

कप्तान : एक मिनट···इसे वहीं रख।

लड़का : क्यों ?

कप्तान : रख तो सही।

लड़का : बस यही बात आपकी बुरी लगती है ! (गोट पीछे रखता है।)

कप्तान : इसमें बुरी बात क्या है ? ऐसी कौन-सी दस-बीस चालें चल चुका है !······वैसे तू है खलीफा ब्लैंडीफूल !

(लड़की का प्रवेश। आकर कप्तान के पास खड़ी हो जाती है। छुपाकर उसको उबला हुआ अण्डा देती है। कप्तान खेल में इतना मशगूल है कि उसके हाथ को हटा-हटा देता है। लड़की के हाथ को झटककर।) परे हट ! (लड़की के हाथ से अंडे की प्लेट गिर कर टूट जाती है। लड़की सहम जाती है।) क्या है ? (अण्डे पर नजर पड़ती है। खुश होकर) अण्डा ! (उठा कर उसे साफ करता है) पहले क्यों नहीं बताया ! (लड़की प्लेट के टुकड़े उठाती है। कप्तान अण्डा खाता है) क्या बात

है···पता है दुनिया में सबसे पौष्टिक खाना क्या है ? अण्डा। बिना तन्दुरुस्त मुर्गे के मुर्गी···(मुड़कर दड़बे को देखता है। लड़की से) आज तो जान खा जाएगी। उसने कमरे धुलाए हैं और तूने फिर उसे खोल दिया। (लड़की सिर से 'नहीं' का संकेत करती है) जा, चल ढूंढ-खोज उसे, चल-चल। (लड़की दड़बे में देखती है। कप्तान उसके पीछे-पीछे जाता है। दड़बे में देखता है) नहीं है! आज आ गई शामत! दिन भर तो बाग दे रहा था। ··अरी खड़ी क्यों हो गई है! चल ढूंढ उसे! (लड़की इधर-उधर देखती हुई कमरे में चली जाती है। कप्तान उसके पीछे-पीछे जाता हुआ)

कप्तान : ऐसे पड़ोसी हैं ल्लेडीफूल उन्हें फूटी आंख नहीं देख सकते! कल खेलने-चुगने (आवाज़ दबाकर) इसके चला गया। मार हो-हुल्लड़ मचाने लगी रण्डी! मैं कहता हूं किसके बच्चे नहीं जाते पास-पड़ोस में। दंगा भी करते ही हैं, गंदा भी करते हैं। इसका यह मतलब तो नहीं कि उनकी मयत उठाओ अब। मैं डर रहा हूं···फिर इसी रण्डी के न चला गया हो मुर्गी के पीछे-पीछे। वही हो-हुल्लड़ न मचाने लगे! (जाता है) कमबख्त चला भी तो नहीं जाता (प्रस्थान···मौन···आगंतुक व औरत की आवाज़ें, लड़का बाहर चला जाता है आगंतुक और औरत का प्रवेश। आगंतुक बनियान और धोती पहने है। उसके हाथ में गीली सफ़ेद धोती और लाल लंगोट। ऐसा लगता है जैसे अभी-अभी स्नान-ध्यान करके उठा है। औरत के हाथ में साग की टोकरी। आगंतुक पीछे तार पर धोती फैलाता है औरत बैठकर साग काटती है।)

आगंतुक : तब से यह लड़का कानपुर लौटकर क्या हो गया नहीं?

औरत : जाता कैसे ?
आगंतुक : क्यों ?
औरत : राम जाने······डरता है।
आगंतुक : डरता है ?·· ···वहां जाने में डर कैसा ?
औरत : कहता है······अच्छा नहीं लगता।
आगंतुक : तब तो यह चोर होगा।
औरत : चोर !
आगंतुक : नहीं तो खूनी होगा।
औरत : खूनी !
आगंतुक : इसीलिए तो भागा है।
औरत : नहीं, नहीं। खूनी क्यों होगा ?
आगंतुक : (शक से) इसने···खून·· नहीं किया ! तो फिर······
औरत : क्या ?
आगंतुक : (बात बदलकर) आजकल बद्रीनारायण के रास्ते पर दस-दस फुट···बल्कि इससे भी ज्यादा बर्फ जमी हुई होगी। रास्ते नजर ही नहीं आते।
औरत : तुम पिछली बार कब गए थे ?
आगंतुक : मेरी भली चलाई। मैं·· मैं तो···यह समझ लो···बस· साल·· हां हर साल ही चला जाता हूं। एक बार तो जाता हूं। (कमरे की ओर जाता है)
औरत : क्या चाहिए ?
आगंतुक : पानी पीने को मन कर रहा है···लड़की कहां है ?
औरत : मुर्गे को ढूंढने गई है।
आगंतुक : मुर्गा ?
औरत : हां, अभी सुना नहीं· बाहर मुर्गे के लिए उस पर चीखने

(क्षणिक विराम) क्यों ?

आगंतुक : यों ही, मुझे मुर्गे का एक क़िस्सा याद आ गया। मेरा दोस्त था। उसने भी ऐसा ही एक मुर्गा पाल रखा था। बड़ा हट्टा-कट्टा। सब जगह उसके साथ लगा रहता था। उसे भी मुर्गे से बड़ा लगाव हो गया था। ठीक इनकी तरह। एक दिन क्या देखा कि मुर्गा नदारद। ढूँढ़-खोज हुई। पर मुर्गे का कहीं पता ही नहीं चला। उसके पता लगने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता था, क्योंकि उसी रात लौटते वक्त···मेरा मतलब है उस रात जब मैं · वो·· क्या कहते है, मंदिर से पूजा करके लौट रहा था तो क्या देखा कि तीन-चार कुत्ते दुम दबाये 'भू-भू' दबी आवाज में भौंक रहे थे। पेड़ के इर्द-गिर्द मंडरा रहे थे। दूर से कुछ नज़र नहीं आया। अंधेरा था। पास जाकर देखा एक मुस्टंड-मुशण्ड कुत्ता चचर-चबर उस मुर्गे की हड्डियां चबा रहा था।

औरत : हाय राम!

आगंतुक : पर जब मेरे दोस्त को यह खबर मिली तो वह बड़ा रोया, बड़ा रोया। गश खाकर गिर-गिर पड़ा। बाद में मुझे लगा कि उसे मुर्गे का वो हाल बताना नहीं चाहिए था। मेरे कहने का मतलब समझ रही हैं आप ?

औरत : (घबराकर) वो तो बिना मुर्गे को देखे कौर भी नहीं तोड़ते।

आगंतुक : इसीलिए तो कह रहा हूं, उन्हें ऐसी खबर से बरी ही रखना अच्छा होगा।

औरत : वह तो उठ भी नहीं सकेंगे।

आगंतुक : पर मुझे विश्वास है ऐसा होगा ही नहीं। यह तो मैंने यों ही याद आने पर कह दिया। अब देखो लड़का कानपुर से घबराता

बेचारे को क्यों फंसाया ?

ौरत : बदला लेना चाहते होंगे।

ंतुक : यह रामसिंह कौन था ?

ौरत : पता नहीं ··दोस्त होगा।

गंतुक : और गोपाल ?

ौरत : वह भी।

गंतुक : यह तो बहुत बुरा किया उन्होंने ! ऐसे तो लड़के को फा
हो जाती !

औरत : इसीलिए तो वहां से भागकर कहां-कहां नहीं गया यह।

गंतुक : कहां-कहां गया ?

औरत : हिमालय के पहाड़ी जंगलों में·· पंजाब के शहरों में। इसः
तो वारंट था।

गंतुक : इसका नाम क्या है ?

औरत : यह नहीं बताया उसने। कहता है लोग मुझे बदले नाम से ह
जानते हैं, अच्छा है।

ागंतुक : क्यों ?

औरत : गुज़रे को भूल जाना ही अच्छा है। कहता है वह किसी क
नहीं होता है। (कप्तान के रोने की आवाज़। कप्तान व
लड़की का प्रवेश। कप्तान का सांस चढ़ा है।)

आगंतुक : (बात बदलकर)···हां, तो मैं कह रहा था···बद्रीनारायण के
रास्ते पर आजकल दस-दस गज से भी ज्यादा बर्फ जमी रहती
है।

कप्तान : (रो कर) मेरा मुर्गा !···मेरा मुर्गा !···

औरत : बुढ़िया के यहां देखा ?

कप्तान : (रो कर) हां !

कप्तान : बड़ा बुरी हैला। [illegible] की दुम[illegible]

औरत : [illegible] भी ही मारे [illegible] मुझ ?

कप्तान : [illegible] अन्दर बापूभाई बना रहा था।

आगंतुक : (कप्तान को देखता है) [illegible]

कप्तान : (रो कर) नहीं, मेरा मुर्गा ?

औरत : यहीं-कहीं घूम रहा होगा, आ जायगा।

कप्तान : और बापूभाई ?

आगंतुक : वो मैं ला दूंगा।

कप्तान : जरूर लाना। (रो कर) मेरा मुर्गा···

औरत : और मत मचाओ, [illegible] आ[illegible]। नहीं तो [illegible]
लड़ना शुरू कर देगी। (कप्तान का हाथ पकड़[illegible]
खाने के पीछे मरे रहते हैं। फिर बुखार चढ़ गया[illegible]

कप्तान : बापूभाई ?

औरत : अन्दर कितनी मिठाई पड़ी है।

कप्तान : मैंने छुपा कर रखी है···जरूर तुमने ले ली होगी!

औरत : (थर्मामीटर झटक कर) नहीं, मैंने छुई भी नहीं। ([illegible]
उसके आगे करती है) लो।

कप्तान : मेरा मुर्गा···(थर्मामीटर उसके मुंह में डाल देती है। [illegible]
मुंह बनाता है फुलाता है। अब आधा मिनट चुप होके [illegible]
मौन)

औरत : (थर्मामीटर निकालती है) यह क्या! टूटा कैसे ?

कप्तान : मुंह मे। (थूकता है)

औरत : मुंह मे कैसे टूट गया ?

कप्तान : तुमने लगाया ही ऐसे।

औरत : तोड़िये खुद और दोष मुझे

कप्तान : (थर्मामीटर को देखकर रोता है) यह भी टूट गया···

औरत : अच्छा हुआ !

कप्तान : मेरा थर्मामीटर टूट गया !

औरत : शान्त रहिए, दूसरा मंगवा दूंगी।

कप्तान . और मुर्गा ?

औरत : वह भी आ जाएगा। आराम से बैठिए तो सही।

कप्तान . नहीं, मैं लेटूंगा।

औरत . तो चलो फिर···(उसे अन्दर ले जाती है)

कप्तान . (जाते हुए) मेरा मुर्गा ··· (प्रस्थान) (क्षणिक विराम)

आगंतुक अब वह नहीं मिलेगा···(लड़की प्रश्न-सूचक दृष्टि से उसे देखती है) गया, अपनी जगह पहुंच गया। (क्षण-भर एक-दूसरे की आंखों में देखते हैं। लड़की आंखें नीची कर लेती है) तूने कभी गुलाबी रंग की साड़ी पहनी है ? (लड़की 'नहीं' में सिर हिलाती है।)

पहनेगी ?

(लड़की 'हां' में सिर हिलाती है, आगंतुक भागकर कमरे से साड़ी ले आता है।)

देख···

(लड़की के पास आता है।)

ले इसे पहनकर देख···मैं-मैं···

हाथ बढ़ाती है।)

··ठहर···चल, अन्दर चल···

(लेकर कमरे में जाता है। कमरे से आवाजें।)

ठहर तो···मैं पहना देता हूं।

···कि रास्ता···(घबराई हुई लड़की

आगंतुक : (कप्तान से) बताओ इसने कानपुर में···

कप्तान : तुम, आओ हो जाए एक बाज़ी (बैठता है) ... पड़ती है। (आगंतुक से) तुम, तुम नहीं, पहले इसके साथ, देखो यह कैसे खेलता है···(लड़के से) हो जाए बाज़ी पूरी।

लड़का : यह यहां नहीं रहेगा।

कप्तान : हां, नहीं रहेगा, आ···

आगंतुक : मैं या ये ?

लड़का : खामोश !

आगंतुक : वाह, उल्टा चोर कोतवाल को डांटे !

कप्तान : क्या मतलब ?

आगंतुक : ये खूनी है, (लड़का सहम जाता है)

कप्तान : (एकदम) क्या ?

आगंतुक : इसने खून किया···

कप्तान : क्या बकते हो !

आगंतुक : और आप इस बात को अच्छी तरह जानते हैं।

कप्तान : मैं कुछ नहीं जानता !

आगंतुक : जानते हो ! हिमालय के जंगलों में ढूंढा, पंजाब का चप्पा-चप्पा छान मारा, पर इसकी हवा तक नहीं लगी। मायूस कानपुर को लौटना पड़ा। वहां खबर मिली कि शहज़ादे साहब दिल्ली में धूनी रमाए हैं। दिल्ली के एक-एक सिख से मिला, दोस्ती की, पर ऐसे पट्ठे का पता न लगा···पता भी कैसे लगे दाढ़ी-मूंछ, हुलिया ही बदला है !

कप्तान : अभी मुंडवाये नहीं ?

आगंतुक : मुंडवायेगा···मुंडवायेगा···जेल में···

कप्तान : मतलब ?

आगंतुक : इसने खून किया है।

कप्तान : इसने कोई खून-वून नहीं किया, मिस्टर्रीमून !

आगंतुक : किया है…

लड़का : (जोर से) नहीं !

आगंतुक : चीखो मत !

कप्तान : क्या सबूत है तेरे पास ?

आगंतुक : सबूत… (लड़के को देखता है) नाम था उसका……क्या नाम था ?

लड़का : मुझे नहीं मालूम।

आगंतुक : मालूम है !…

लड़का : यह ग़लत है !

आगंतुक : यह सही है!…गोपाल को जानते हो ?

लड़का : गो…पा…ल…!

आगंतुक : रामसिंह को पहचानते हो ?

लड़का : रा…म…सिंह…!

आगंतुक : हां, गोपाल और रामसिंह ?

लड़का : …दोस्त बनते थे ! उनके मुंह पर…उनके मुंह पर थूकता हूं, मैं ! मुझे बन्द करवाया… कई-कई दिनों तक खाने-पीने को नहीं पूछा। खाने को देते तो पानी नदारत पानी देते तो खाना नदारत। मुझे विद्रोही करार देकर सस्पैंड तो किया जाता पर बरखास्त नहीं, हवालात गया पर कैद नहीं काटी। उनकी इन हरकतों से महसूस होता…मेरी भी कोई हस्ती है, कलम में ज़ोर है। अक्सर वो रात-आधी-रात आते, बियर-व्हिस्की पीलाते, मुझसे बातें करते…दोस्ताना और अदबी दुनिया की बातें, रेवोल्यूशन की बातें, आम-ज़िन्दगी की बातें।

कर सकते थे। यह मुझे अच्छा लगता। काश! ई
तारन पैदा कर सकता उनकी बात कहन की, मैं इन
पैदा कर सकता उनके मुह के विचारों में जो सकने की
उनकी असाधारण होती, विद्रोही मुझे कहते, काश
लाहट उनकी होती वासना मुझे कहन। लेकिन वो स
दिखावा, एक आडम्बर, एक छल, एक प्रपन्च था!
राजनैतिक-साहित्यिक विचारों पर वो मुझसे घन्टो
करते, यहां तक कि कभी-कभी तो रात सुबह में बदल ज
जाने-अनजाने मुझे कहते रहा विद्वान-राजनितिज्ञ समझ
थे वो। मुझे महसूस होने लगा, सही भी था, उन्हें मेरी
मुझे उनकी जरूरत थी। एक दिन मैंने उनसे कहा मैंने
"'देखो, हमें एक-दूसरे की जरूरत है। अगर हम अप
से सोचने-लिखने लगेंगे तो यह व्यवस्था खुद-बखुद
जाएगी। फिर सभी के पास" काम होगा, कोठी होगी,
होगी, बीवी-बच्चे होंगे। एक दिन, बहुत दिनों के बा
आए, घबराए हुए। आत्मीयता से मुझसे ...तुम्हें
हमारा मतलब ...

हर चीज की भरमार है। बाकी लोग वैसे ही उसी तरह,
भी दफ्तर-गुरबत की जिन्दगी गुजार रहे हैं। इसीलिए
लगता है···मैं बार-बार सोचता हूं···एक न एक दिन खून
जरूर करूंगा···चाहे मुझे ··
मह···ये मान (पेट दबा के कराहता है) हाय, हाय मेरा पेट !
मेरा पेट ! (लड़की व औरत का तेजी से प्रवेश। औरत कप्तान
को बैठाती है लड़का अपने कमरे में चला जाता है)
: अभी कहती हूं अनाप-शनाप मत खाओ। (सहलाती है लड़की
से) भाग के ताक पर पड़ी दवा उठा ला। (लड़की का
प्रस्थान। कप्तान कराहना बन्द करता है) बद्रीनारायण के
पट कब खुलते हैं ?
: इस बार लगता है, जल्दी खुलने वाले हैं।
: क्यों ?
: यों ही···यानी···इस बार···क्या है···कुछ तो है···
: लेकिन गर्मियों से पहले तक तो बर्फ जमी रहती है।
: बर्फ···हां इस बार···सुना है इस साल···वो गर्मी जल्दी और
ज्यादा पड़ने वाली है।
: मना कर दो···भगा दो···यह अच्छा आदमी नहीं है।
: यह क्या बकने लगे हो ?

आगंतुक : सुन ! (लड़की रुकती है। औरत से) इससे मेरा कमरा करने को कह दो।

औरत : शी''शी ' (होठों पर उंगली रखती है ' धीरे से) ठीक है।

(लड़की का आगंतुक के कमरे में प्रस्थान। औरत गुनगुन है'' 'छोटा-सा बलमा मेरा आंगना में गिल्ली खेले। कप सो जाता है)

आगंतुक : (मुस्कराता है'' औरत उठती है) सो गए ?

औरत : आज तबियत ज्यादा खराब है, दिन भर सो नहीं सके।

आगंतुक : तो अन्दर आराम से सुला दो।

औरत : (चादर उढ़ाकर) एक दो घंटे आराम करने दो, नहीं तो उ जाएंगे। (जाती हुई) आओ आरती कर लो।

आगंतुक : आरती ?

औरत : आज एकादशी है।

आगंतुक : एकादशी ?

औरत : हां''

आगंतुक : अरे हां, आज तो ''आज ही तो है। (औरत का प्रस्थान विराम। मौका पाके आगंतुक पेटी को खोलता है। उसमें से एक डिब्बा निकालता है। खोलता है। उसमें से रेशमी कपड़े में लिपटी हुई एक पुरानी ऊंची ऐड़ी की सैंडिल निकाल कर देखता है। कप्तान बड़बड़ाता है। आगंतुक सैंडल फेंककर अपने कमरे में चला जाता है। दरवाजा बन्द कर लेता है। कप्तान सैंडल फेंकने की आवाज से उठ जाता है।)

कप्तान : कौन ? (उसकी दृष्टि सैंडल पर पड़ती है। उसे उठाता है। पेटी को देखता है। [illegible] होती है, धीरे-धीरे कुर्सी पर बैठ

आता है। सैंडल को जल्दी निहारता है···सोने से लगा
है। विराम। तेज़ी से औरत का प्रवेश। हाथ में तार
: (कप्तान से) सुनो, तार आया है (लड़के के कमरे में
है। लड़का सूटकेस, ट्रंक, हैवरसैक लटकाए कमरे से बाहर
आता है, औरत से बिना कुछ कहे जाने के लिए आगे बढ़ता
है।) देखना, तार आया है! (लड़का आगे बढ़ता है) मैं तेरे
लिए खाना बना रही हूं! तू जा कहां रहा है? (उसके आगे
आकर) तू बोलता क्यों नहीं? कहां जा रहा है? (लड़का
रुपये उसके आगे करता है) मैं कह रही हू तार आया है, और
तू किराया दे रहा है! पढ़ तो सही कहां से आया है···क्या
लिखा है (लड़का दूर से तार को देखता है तेज़ी से प्रस्थान।
औरत जल्दी से उसके पीछे जाती है।) अरे कुछ बता तो सही
कहां जा रहा है? (दरवाजे से बाहर देखती है। विराम।
कप्तान के पास आकर) लड़का चला गया! (कप्तान चुप है)
तार आया है!·· वह घर छोड़ कर चला गया है! (क्षणिक
विराम) मैं कह रही हू तार आया है·· आग लगे इनकी नींद
को! (तार को देखती है आगंतुक के द्वार के पास आकर)
भैया, ज़रा देखना तार आया है! (दरवाज़ा खटखटा कर)
भैया बाहर आना, तार आया है! (विराम। टूटे हुए शीशे से
अन्दर झांकती है। उसको एक धक्का-सा लगता है। भाव बदल
जाते हैं) नहीं···(अवाक कोने में खड़ी हो जाती है। विराम।
एकाएक दरवाज़ा खुलता है। आगंतुक सूटकेस लेकर बाहर
आता है, धोती की लांग लटकी हुई है, टोपी हाथ में।)
[illegible]

आगंतुक : सुन ! (लड़की रुकती है। औरत से) इनसे मेरा कमरा बन्द करने को कह दो।

औरत : शो···शो · (होठों पर उंगली रखती है · धीरे से) टी. दे।

(लड़की का आगंतुक के कमरे में प्रस्थान। औरत गुनगु है····'छोटा-सा बलमा मेरा आंगना में गिल्ली खेले। क सो जाता है)

आगंतुक : (मुस्कराता है·· औरत उठती है) सो गए ?

औरत : आज तबियत ज्यादा खराब है, दिन भर सो नहीं सके।

आगंतुक : तो अन्दर आराम से सुला दो।

औरत : (चादर उढ़ाकर) एक दो घंटे आराम करने दो, नहीं तो जाएंगे। (जाती हुई) आओ आरती कर लो।

आगंतुक : आरती ?

औरत : आज एकादशी है।

आगंतुक : एकादशी ?

औरत : हां ··

आगंतुक : अरे हां, आज तो ··आज ही तो है। (औरत का प्रस्थान विराम। मौका पाके आगंतुक बैग को खोलता है। उसमें एक डिब्बा निकालता है। खोलता है। उसमें से रेशमी कप में लिपटी हुई एक पुरानी ऊंची ऐड़ी की सैंडिल निकाल क देखता है। कप्तान बड़बड़ाता है। आगंतुक सैंडल फेंकक अपने कमरे में चला जाता है। दरवाजा बन्द कर देता है कप्तान सैंडल फेंकने की आवाज से उठ जाता है।)

कप्तान : कौन ? (उसकी दृष्टि सैंडल पर पड़ती है। उसे उठाता है। ··· सी होती है, धीरे-धीरे कुर्सी ···